इकाई–3

लघु उतरात्मक व वस्तुनिष्ठ प्रश्न

राज्य तथा राज्य का विकास
(State and Development of State)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: राज्य (State) की परिभाषा दीजिए।

उत्तर : 'राज्य' शब्द जिसे अंग्रेजी में स्टेट कहा जाता है, की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'स्टेटस से हुई। स्टेट्स शब्द का अर्थ है एक व्यक्ति का समाजिक स्तर। धीरे–धीरे इसका प्रयोग समाज के लिए किया जाने लगा। आधुनिक अर्थ में इस शब्द का प्रयोग सर्व प्रथम मैक्यावली द्वारा किया गया।विभिन्न लेखकों द्वारा 'राज्य की भिन्न–भिन्न परिभाषाएं दी गई हैं इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:–

1. **बोडिन** (Bodin) के शब्दों में 'राज्य परिवारों तथा उनकी' सांझी सम्पत्ति का एक समुदाय है जो एक सर्वोच्च सत्ता तथा तर्क बुद्धि द्वारा शासित है।
2. **वुडरोविल्सन** (Woodrow wilson) के अनुसार 'एक निश्चित भू–भाग पर कानून के लिए संगठित जनता का नाम राज्य है।'
3. **अरस्तू** (Aristotle) के अनुसार, 'राज्य परिवारों तथा ग्रामों का एक संघ होता है जिसका उद्देश्य एक पूर्ण तथा आत्म–निर्भर जीवन की स्थापना है, जिससे हमारा अभिप्राय एक सुखी और उदारपूर्ण जीवन से है।'

प्रश्न 2: राज्य के अनिवार्य तत्व (Elements) बताइए।

उत्तर : राज्य के निर्माण में निम्नलिखित चार अनिवार्य तत्व हैं–

1. **जनसंख्या :** राज्य के निर्माण के लिए जनसंख्या अनिवार्य है। बिना जनसंख्या के राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। राज्य की जनसंख्या के लिए कोई सीमा निश्चित नहीं की जा सकती।
2. **निश्चित भू–भाग :** राज्य के निर्माण का दूसरा अनिवार्य तत्व निश्चित भू–भाग है। राज्य की स्थापना के लिए भू–भाग की सीमा भी निश्चित नहीं की जा सकती। राज्य छोटे या बड़े आकार के हो सकते हैं।
3. **सरकार :** राज्य के निर्माण के लिए एक संगठित सरकार का होना अनिवार्य है जो कानूनों का निर्माण करे तथा उन्हें तोड़ने वालों को दण्ड दे।
4. **प्रभुसत्ता :** राज्य के निर्माण का चौथा अनिवार्य तत्व प्रभुसत्ता है। प्रभुसत्ता का अर्थ है सर्वोच्च शक्ति। प्रभुसत्ता दो प्रकार की होती है:–आन्तरिक प्रभुसत्ता व बाहरी प्रभुसत्ता

   1. आन्तरिक प्रभुसत्ता : आन्तरिक प्रभुसत्ता का अर्थ है कि राज्य के अपनी सीमा के अंदर रहने वाले सभी व्यक्तियों, संस्थाओं तथा समुदायों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त है।

2. बाहरी प्रभुसत्ता : बाहरी प्रभुसत्ता का अर्थ है कि राज्य की सीमा से बाहर कोई भी ऐसा व्यक्ति अथवा संस्था नहीं है जो राज्य को आदेश दे सके तथा उनका पालन करवा सके।

प्रश्न 3: राज्य की क्या आवश्यकता है?

उत्तरः हमें राज्य की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से हैः–

1. **शांति** : देश में शांति तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए।
2. **आक्रमणों से रक्षा** : बाहरी आक्रमणों से देश की रक्षा करने के लिए।
3. **लोक कल्याणकारी कार्य** : लोक कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए। इनमें शिक्षा का प्रबंध, स्वास्थ्य, गरीबी दूर करना, सफाई तथा चिकित्सा आदि का प्रबंध शामिल है।
4. **अधिकारों की सुरक्षा** : नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए भी राज्य की आवश्यकता होती है। राज्य द्वारा ही ऐसी परिस्थितियों की स्थापना की जाती है। जिसमें नागरिकों को अधिक से अधिक अधिकार मिल सके।
5. **अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की स्थापना** : अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की स्थापना के लिए भी राज्य की आवश्यकता होती है। आज के युग में सभी राज्य एक दूसरे पर निर्भर करते हैं, जिनके लिए अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की स्थापना की जाती है।

प्रश्न 4: क्या निम्नलिखित राज्य है?

1. पाकिस्तान, 2. बांग्लादेश, 3. संयुक्त राज्य अमेरिका, 4. उत्तर प्रदेश 5. हरियाणा।

उत्तरः 1. पाकिस्तान एक राज्य है क्योंकि इसके पास राज्य के निर्माण के चारों आवश्यक तत्व – जनसंख्या, भू–भाग, सरकार तथा प्रभुसत्ता मौजूद है।

2. बांग्लादेश तथा संयुक्त राज्य अमेरिका को भी राज्य कहा जा सकता है क्योंकि इसके पास भी राज्य के निर्माण के चारों आवश्यक तत्व मौजूद हैं।

3. उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा को हम राज्य नहीं कह सकते क्योंकि यद्यपिइ न दोनों के पास अपनी जनसंख्या, निश्चित भू–भाग तथा सरकार है परंतु इसके पास प्रभुसत्ता नहीं है। ये दोनों ही केन्द्रीय सरकार के अधरीन हैं अतः इन्हें राज्य नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 5: क्या संयुक्त राष्ट्र संघ तथा राष्ट्र मण्डल राज्य हैं?

उत्तर : 1. संयुक्त राष्ट्र संघ : संयुक्त राष्ट्र संघ एक ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा की स्थापना करने के लिए की गई थी इसकी न तो अपनी जनसंख्या है और न ही अपना भू–भाग इसके पास प्रभुसत्ता का भी अभाव है। अतः हम संयुक्त राष्ट्र संघ को 'राज्य' नहीं कह सकते।

2. राष्ट्र मण्डल : राष्ट्र मण्डल भी संयुक्त राष्ट्र संघ की भांति कुछ स्वतंत्र राज्यों का एक ऐच्छिक संगठन है। राष्ट्र मंडल की न तो अपनी जनसंख्या है, न ही भू–भाग और न ही इसके पास प्रभुसत्ता है। इस कारण से इसे राज्य नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 6: राज्य तथा सरकार में कोई चार भेद बताईए।

उत्तरः राज्य तथा सरकार में भेद की चार बातें निम्नलिखित हैं :–

1. सरकार राज्य का एक अंग है–राज्य का निर्माण चार तत्वों

   क. जनसंख्या (Population)

   ख. निश्चित भू–भाग (Fixed Territory)

   ग. सरकार (Government)

   घ. प्रभुसत्ता (Sovereignty)

   सरकार इनमें से केवल एक तत्व है।

2. निश्चित भू–भाग (Fixed Territory) : राज्य के लिए निश्चित भू–भाग आवश्यक है, सरकार के लिए नहीं।

3. सदस्यता (Membership) : राज्य की सदस्यता प्रत्येक व्यक्ति के लिएए अनिवार्य है परंतु सरकार की सदस्यता अनिवार्य नहीं होती यह ऐच्छिक होती है।

4. राज्य एक समान होते हैं, सरकारें विभिन्न प्रकार की होती हैं। सभी राज्य एक समान होते हैं अर्थात् सभी राज्यों का निर्माण उपरोक्त चार तत्वों के मिलने से होता है। इसके विपरीत सरकारें भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है–लोकतंत्र, तानाशाही, संसदीय, अध्यक्षात्मक एकात्मक तथा संघात्मक इत्यादि।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple-Choice)

प्रश्न 1: 'राज्य' शब्द का प्रयोग सबसे पहले निम्नलिखित में से किस विद्वान ने किया?

क) अरस्तू　　ख) हॉब्स

ग) मैक्यावली　　घ) बोडिन

प्रश्न 2: "एक निश्चित प्रदेश के राजनीतिक दृष्टि से संगठित लोग राजय हैं।" राज्य की यह परिभाषा किस विद्वान ने दी है?

क) हॉलैण्ड　　ख) लॉस्की

ग) ब्लशंली　　घ) गार्नर

प्रश्न 3: "लोगों के किसी विशेष भू–भाग में कानून के लिए संगठित होने को ही राज्य कहा जाता है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) लॉस्की　　ख) अरस्तु

ग) वुडरो विल्सन　　घ) बोडिन

प्रश्न 4: प्लेटो के अनुसार एक आदर्श राज्य की जनसंख्या होनी चाहिए –

क) 5040　　ख) 10000

ग) 20000　　घ) 15000

प्रश्न 5: रूसो के अनुसार एक आदर्श राज्य की जनसंख्या कितनी होनी चाहिए?

क) 10000 ख) 50000

ग) 5040 घ) 20000

प्रश्न 6: राज्य की भूमि में निम्नलिखित में से कौन–सा शामिल नहीं है?

क) उस राज्य में बहने वाली नदियां ख) उस राज्य की भूमि के ऊपर का वायुमंडल

ग) राज्य में स्थित पहाड़ घ) पड़ोसी राज्य की भूमि

प्रश्न 7: निम्नलिखित में से कौन–सा राज्य का आवश्यक तत्व नहीं है।

क) जनसंख्या ख) सरकार

ग) मान्यता घ) प्रभुसत्ता

प्रश्न 8: "जब किसी देश में रहने वाले लोग अपनी संपूर्ण प्रभुसत्ता–सम्पन्न सरकार के अधीन रहते हैं तो वहां राज्य की स्थापना हो जाती है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) गार्नर ख) ओपनहेम

ग) ब्लंशली घ) गिलक्राइस्ट

प्रश्न 9: प्रभुसत्ता किसका अनिवार्य तत्व है?

क) राज्य ख) समाज

ग) सरकार घ) समुदाय

उत्तर : 1. ग, 2. ग, 3. ग, 4. क, 5. क, 6. घ, 7. ग 8. ख, 9. क।

राज्य की उत्पत्ति के मुख्य सिद्धान्त – दैवी सिद्धान्त, शक्ति सिद्धान्त, पैतृक सिद्धान्त एवं मातृक सिद्धान्त (Major Theories of Origin of State-Divine Theory, Force Theory, Patriarchal and Matriarchal Theory)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: राज्य का दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त (Divine Theory) की व्याख्या करो।

उत्तरः राज्य की दैवी, उत्पत्ति के सिद्धान्त के अनुसार राज्य का निर्माण ईश्वर (God) द्वारा किया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर स्वयं शासन करता है अथवा अपने किसी प्रतिनिधि को शासन करने के लिए पृथ्वी पर भेजता है। राजा अथवा शासन ईश्वर का प्रतिनिधि होता है। वह अपनी समस्त शक्तियां ईश्वर से प्राप्त करता है और वह अपने सभी कार्यों के लिए ईश्वर के प्रति उत्तरदायी होता है। वह जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं होता। इसलिए जनता को उसका विरोध करने का अधिकार नहीं है, क्योंकि उसका विरोध करना ईश्वर का विरोध करना है, जो पाप है।

प्रश्न 2: दैवी–उत्पत्ति (Divine Theory) के सिद्धान्त की आलोचना (Criticism) की कोई चार आधार बताओ।

उत्तर : दैवी–उत्पत्ति के सिद्धान्त की आलोचना के चार आधार निम्नलिखित हैं :–

1. नास्तिक (Aethist) : नास्तिक (जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते) लोग इस सिद्धान्त को कोई महत्व नहीं देते।
2. अनऐतिहासिक (Unhistorical) : यह सिद्धान्त अनऐतिहासिक है, इतिहास में इसका कोई वर्णन नहीं मिलता।
3. मानवीय संस्था (Human Creation) : राज्य एक मानवीय संस्था है दैवी नहीं।
4. खतरनाक (Dangerous) : यह सिद्धान्त खतरनाक है क्योंकि यह निरंकुशत (Despotism) का समर्थन करता है।

प्रश्न 3: राज्य की उत्पत्ति के संबंध पर 'शक्ति सिद्धान्त (Force Theory) पर संक्षिप्त नोट लिखो।

उत्तरः राज्य की उत्पत्ति के बारे में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'शक्ति सिद्धान्त' है। इस सिद्धान्त के प्रमुख समर्थकों में जेंक्स (Jenks), ओपेन हाइमर (Oppen Reimer) आदि विद्वानों के नाम लिए जाते हैं। इस सिद्धान्त का मानना यह है कि राज्य की उत्पत्ति का आधार 'शक्ति' है। युद्ध ने राजा को जन्म दिया। वाल्टेयर का कहना है, "पहला राजा एक भाग्यशाली योद्धा था।" लीकॉक (Leacock) का कहना है, "राज्य की उत्पत्ति मनुष्य द्वारा मनुष्य को पकड़कर दास बनाने और कमजोर कबीलों पर ताकतवर की विजय से हुई है।" इस वाक्य का मतलब यही है कि शुरू में किसी एक वीर पुरूष ने कुछ व्यक्तियों को हराकर उन्हें अपनी अधीन किया और फिर उनकी सहायता से और लोगों को गुलाम बनाकर राज्य कायम किया गया तथा स्वयं राजा बन बैठा।

प्रश्न 4: शक्ति सिद्धान्त की किन आधारों पर आलोचना की गई है?

उत्तरः शक्ति के सिद्धान्त की निम्नलिखित के आधारों पर आलोचना की गई है

1. **केवल शक्ति नहीं** (Not force alone) : राज्य केवल शक्ति से ही उत्पन्न नहीं हुआ। राज्य की उत्पत्ति में कोई अन्य तत्वों की रक्त–संबंध, धर्म, आर्थिक सहयोग तथा राजनीतिक चेतना आदि ने भी भाग लिया है, शक्ति उनमें केवल एक तत्व है।
2. **इच्छा** (Will of the People) : शक्ति की इच्छा राज्य का आधार है, शक्ति नहीं। राज्य एक नैतिक संस्था है जिसे जनता की इच्छा तथा सहमति से संगठित किया जा सकता है। परन्तु शक्ति न तो राज्य का आधार है और न ही अधिक समय तक उसे स्थायी रूप से बनाए रख सकती है।
3. **अनैतिकतापूर्ण** (Immoral) : यह सिद्धान्त अनैतिकतापूर्ण है, क्योंकि यदि इसे स्वीकार कर लिया जाए तो 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' (Might is Right) का सिद्धान्त लागू होगा और केवल शक्तिशाली को ही जीवित रहने का (Survival of the fittest) अधिकार होगा, कमजोर को नहीं।
4. **खतरनाक** (Dangerous) : यह सिद्धान्त विश्व–शांति के लिए बड़ा खतरनाक है। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने का अर्थ यह होगा कि शक्तिशाली राज्यों को अपने से कमजोर राज्यों को अपना गुलाम बनाने तथा उन पर अधिकार करने की छूट देना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: "राज्य पृथ्वी पर परमात्मा का अवतरण है।" यह कथन किसने लिखा है?

क) मार्क्स　　ख) हीगल

ग) हॉब्स　　घ) लॉक

प्रश्न 2: राज्य की उत्पत्ति के शक्ति सिद्धान्त के समर्थकों का मुख्य विश्वास क्या है?

क) राज्य ईश्वर का बनाया गया है।

ख) राज्य की उत्पत्ति सामाजिक समझौते का परिणाम है।

ग) राज्य बल प्रयोग का परिणाम है।

घ) राज्य परिवार का विस्तृत रूप है।

प्रश्न 3: दैवी उत्पत्ति के समर्थकों के अनुसार

क) राज्य शक्ति प्रयोग का परिणाम है।

ख) राज्य सामाजिक समझौते का परिणाम है।

ग) राज्य ईश्वर की देन है।

घ) राज्य का धीरे–धीरे विकास हुआ है।

प्रश्न 4: "राजा ईश्वर की कृति है और पृथ्वी पर दैवीय सरकार का प्रकाशन है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) हॉब्स　　ख) ब्लंशली

ग) गिल क्राईस्ट　　घ) प्लूटार्क

प्रश्न 5: राज्य की उत्पत्ति के बारे में कौन–सा सिद्धान्त सबसे प्राचीन माना जाता है?

क) शक्ति सिद्धान्त　　ख) विकासवादी सिद्धान्त

ग) दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त　　घ) पितृ–प्रधान सिद्धान्त

प्रश्न 6: राज्य की उत्पत्ति का सबसे अधिक मान्य सिद्धान्त कौन–सा है?

क) दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त　　ख) सामाजिक समझौते का सिद्धान्त

ग) शक्ति सिद्धान्त　　घ) विकासवादी सिद्धान्त

प्रश्न 7: "ऐतिहासिक दृष्टि से यह सिद्ध करने में तनिक भी कठिनाई नहीं कि आधुनिक राजनीतिक समाजों का मूल सफल युद्ध में है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) लीकॉक　　ख) जैक्स

ग) वुडरो विल्सन　　घ) रूसो

प्रश्न 8: "राज्य का आधार इच्छा है, शक्ति नहीं" यह कथन निम्नलिखित का है।

क) हॉब्स ख) टी॰एच॰ग्रीन॰

ग) मार्क्स घ) लीकॉक

प्रश्न 9: प्रथम सम्राट एक भाग्यशाली योद्धा था? यह कथन निम्नलिखित का है–

क) मैक्यावली ख) वॉल्टेयर

ग) रूसो घ) लीकॉक

प्रश्न10: निम्नलिखित में से पितृ प्रधान परिवार का समर्थक कौन था?

क) मैकाइवर ख) सर हैनरी मैन

ग) हॉब्स घ) लीकॉक

उत्तर : 1. ख, 2. ग, 3. ग, 4. ख, 5. ग, 6. घ, 7. ख, 8. ख, 9. ख, 10. ख।

राज्य की उत्पत्ति के संबंधी सिद्धान्त : सामाजिक समझौता, विकासवादी तथा मार्क्सवादी सिद्धान्त (Origin of State : Social Contract Theory, Historical or Evolutionary Theory, Marxist Theory)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 5: राज्य की उत्पत्ति के संबंध में सामाजिक समझौते का सिद्धान्त (Social contract theory) क्या है?

उत्तर : राज्य की उत्पत्ति के संबंध में सामाजिक समझौते का सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का समर्थन हॉब्स (Hobbes), लॉक (Locke) तथा रूसो (Russeau) द्वारा किया गया है। सामाजिक समझौते के सिद्धान्त के समर्थकों के अनुसार राज्य एक दैवी संस्था न होकर मानवीय संस्था है। उनका कहना है कि राज्य की स्थापना से पहले मनुष्य प्रकृतिक अवस्था (State of nature) में रहता था परन्तु किंही कारणों से इस अवस्था में उसका जीवन असहनीय हो गया। अतः प्रकृतिक अवस्था से छुटकारा पाने के लिए लोगों ने एक सामाजिक समझौता किया जिसके परिणामस्वरूप राज्य की उत्पत्ति हुई।

प्रश्न 6: प्राकृतिक अवस्था (State of Nature) के संबंध में हॉब्स (Hobbes) क्या कहता है?

उत्तरः हॉब्स (Hobbes) के अनुसार प्रकृतिक अवस्था में मनुष्य का जीवन अन्धकारमय था। लोग आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे और उनकी हालत बहुत बुरी थी। हॉब्स (Hobbes) के अनुसार, "प्रकृतिक अवस्था में मनुष्य का जीवन एकांकी, दीन, अपवित्र, पाश्विक तथा क्षणिक होता था।

प्रश्न 7: लॉक (Locke) के अनुसार प्राकृतिक अवस्था (State of Nature) में व्यक्ति की दशा कैसी थी?

उत्तरः लॉक (Locke) के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य शांति तथा परस्पर सहयोग से रहते थे। इस अवस्था में लोगों को जीवन, सम्पत्ति तथा स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त थे, जो उन्हें प्रकृति द्वारा गिले हुए थे। परंतु

चूंकि वहां उन नियमों को लागू करने तथा उन्हें तोड़ने वालों को दण्ड देने के लिए कोई शक्ति मौजूद नहीं थी। अतः लोगों में आपसी झगड़े होने लगे। ऐसी स्थिति में छुटकारा पाने के लिए लोगों ने समझौता किया और राज्य की स्थापना की।

प्रश्न 8: रूसो (Rousseau) के अनुसार 'प्राकृतिक अवस्था' (State of Nature) में मनुष्य की क्या स्थिति थी?

उत्तरः रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था मनुष्य के जीवन की एक आदर्श अवस्था थी, जिसमें मनुष्य पूरी तरह से सुखी था। उसका जीवन आत्मनिर्भर, सुखी तथा सम्पन्न था। परन्तु जनसंख्या में वृद्धि, खेती के आरम्भ होने तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति के विकास होने के कारण असमानता पैदा हो गई और लोगों में आपसी झगड़े होने लगे।

प्रश्न 9: लॉक (Locke) के सामाजिक समझौते (Social contract) की कोई दो विशेषताएं बताओ।

उत्तर : 1. लॉक (Locke) के अनुसार दो समझौते हुए एक सामाजिक समझौता तथा दूसरा राजनीतिक समझौता। पहले समझौते द्वारा समाज की स्थापना हुई तथा दूसरे राज्य तथा सरकार की स्थापना हुई।

2. लोगों का राजा के साथ समझौता कुछ शर्तों के आधार पर हुआ। यदि शासक जनता के जीवन, सम्पत्ति तथा स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा नहीं करता तो जनता को उसे हटाने तथा उसके स्थान पर दूसरा राजा बनाने का अधिकार था।

प्रश्न 10:राज्य की उत्पत्ति का सामाजिक समझौता का सिद्धान्त अनऐतिहासिक (Unhistorical) है व्याख्या करो।

उत्तरः इतिहास में इस बात का कहीं उदाहरण नहीं मिलता कि राज्य की उत्पत्ति प्रकृतिक अवस्था में रहने वाले लोगों के समझौते के परिणामस्वरूप हुई है। इतिहास इस बात का भी समर्थन नहीं करता कि राज्य की स्थापना से पूर्व मनुष्य प्रकृतिक अवस्था में रहते थे। मनुष्य जन्म से ही सामाजिक प्राणी है और वह सदा से ही समाज में रहता आया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक समझौते के सिद्धान्त का यह कहना कि मनुष्य प्राकृतिक अवस्था से एक दम राज्य के संगठन में रहने लगा, ऐतिहासिक दृष्टि से गलत है। राज्य वास्तव में एक विकासवादी संस्था है, जिसका धीरे–धीरे विकास हुआ है और इसके निर्माण में कई तत्वों में भाग लिया है।

प्रश्न 11:सामाजिक समझौते का सिद्धान्त कानून (Legally) की दृष्टि से गलत (Wrong) है, व्याख्या करो।

उत्तरः सामाजिक समझौते का सिद्धान्त कानूनी दृष्टि से निम्नलिखित आधार पर गलत है :–

1. किसी भी समझौते को लागू करने के लिए कानून का होना आवश्यक है जो केवल राज्य में ही संभव है। परन्तु सामाजिक समझौता करने वालों में जो समझौता किया वह प्राकृतिक अवस्था में किया जहां न राज्य था न कानून और न ही सरकार, अतः यह समझौता गैर–कानूनी है।
2. समझौता केवल उन्हीं लोगों पर लागू होता है जिनके द्वारा वह (समझौता) किया जाता है। परंतु सामाजिक समझौते के सिद्धान्त के अनुसार समझौता आने वाली पीढ़ियों पर भी लागू होता है। यह बात कानून की दृष्टि से मान्य नहीं है।

3. प्रायः जो भी समझौता किया जाता है, उसे कुछ शर्तों पर तोड़ा भी जा सकता है। परंतु इस सामाजिक समझौते के सिद्धान्त के अनुसार जो समझौता किया गया, वह तोड़ा नहीं जा सकता था। जो कानूनी दृष्टिकोण से गलत है।

4. सामाजिक समझौते को कानूनी दृष्टि से इसलिए भी गलत माना जाता है क्योंकि इनके अनुसार समझौता पहले हुआ और राज्य की स्थापना बाद में हुई। वास्तव में राज्य पहले बना और समझौता उसके बाद में हुआ।

प्रश्न 12:राज्य की उत्पत्ति का सामाजिक समझौते का सिद्धान्त दार्शनिक (Philosophical) दृष्टि से गलत है, व्याख्या करो।

उत्तर : सामाजिक समझौते के सिद्धान्त की दार्शनिक दृष्टिकोण में निम्नलिखित आधार पर आलोचना की जाती है :–

1. सामाजिक समझौते के सिद्धान्त के अनुसार राज्य की उत्पत्ति से पहले मनुष्य, प्रकृतिक अवस्था में रहता था। हॉब्स (Hobbes) के अनुसार उस अवस्था में मनुष्य एक दूसरे के साथ लड़ते–झगड़ते रहते थे। मनुष्य स्वार्थी, गंवार तथा जंगली थे। ऐसे मनुष्यों द्वारा अचानक समझौता करना दार्शनिक दृष्टिकोण से संभव नहीं लगता।

2. लॉक (Locke) का कहना है कि मनुष्य को प्रकृतिक अवस्था में कुछ अधिकार प्राप्त थे, यह गलत है। उस समय जब न कोई समाज था और न ही राज्य, अधिकारों का प्रश्न ही नहीं उठता।

3. राज्य एक प्राकृतिक संस्था है। जिसका धीरे–धीरे विकास हुआ है। इस विकास में अनेक तत्वों ने भाग लिया है।

4. राज्य की सदस्यता व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, यह उसकी इच्छा पर निर्भर नहीं करती।

प्रश्न 13:राज्य एक विकसित संस्था है, कृत्रिम (बनावटी) नहीं स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः राज्य एक कृत्रिम (Artificial) बनावटी संस्था नहीं है, बल्कि इसका विकास (Evolution or Development) हुआ है। सामाजिक समझौते के सिद्धांत के अनुसार राज्य का निर्माण मनुष्यों द्वारा उसी प्रकार हुआ है, जैसे मनुष्यों द्वारा मेज, कुर्सी तथा मकान आदि का निर्माण हुआ है, परंतु यह विचार ठीक नहीं है। वास्तव में राज्य मनुष्य की सामाजिक प्रवृत्ति का परिणाम है। आधुनिक लेखक राज्य को एक विकसित (Ecolutionary) संस्था मानते हैं। जिसके विकास में अनेक तत्वों को भाग लिया है। लीकॉक (Leacock) ने लिखा है, "राज्य की उत्पत्ति विकास के आधार पर हुई है जिसका इतिहास मनुष्यों के ज्ञात और अज्ञात काल तक फैला हुआ है।"

प्रश्न 14:रूसो की 'सामान्य इच्छा' (General Will) पर विचार प्रकट कीजिए।

उत्तरः रूसो (Rousseau) के अनुसार राज्य की उत्पत्ति से पूर्व मनुष्य प्रकृतिक अवस्था में रहता था और वह अवस्था बहुत ही शांतिपूर्ण तथा सुखमय थी। परंतु जनसंख्या की वृद्धि सभ्यता का आरंभ तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति के विकास के साथ–साथ प्राकृतिक अवस्था की आदर्श परिस्थितियां समाप्त हो गई और अराजकता और अल्पवस्था फैल गई। इससे छुटकारा पाने के लिए लोगों में अपने सारे अधिकार सारे समाज को सौंप दिए। यह कार्य सामान्य इच्छा (General Will) के निर्देश द्वारा हुआ जो प्रभुसत्ता के रूप में बदल गई।

रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :–

1. सभी लोगों का कल्याण : सामान्य इच्छा समाज में कम अथवा अधिक व्यक्तियों की वह इच्छा है, जो समाज के सभी लोगों के कल्याण तथा भलाई के लिए होती है।
2. सर्वश्रेष्ठ : सामान्य इच्छा सर्वश्रेष्ठ होती है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति, संस्था और सरकार भी उसके अधीन होती है।
3. प्रभुसत्ता : प्रभुसत्ता सामान्य इच्छा में पाई जाती है।
4. स्थायी : सामान्य इच्छा स्थायी होती है। यह भावनाओं पर आधारित न होकर मनुष्यों की विवेकपूर्ण इच्छा है।
5. न्यायपूर्ण : सामान्य इच्छा सदा न्यायपूर्ण होती है।

प्रश्न 15:सामाजिक समझौते के सिद्धान्त उपयोगिता (Utility) लिखो।

उत्तर : सामाजिक समझौते की उपयोगिता निम्नलिखित है :–

1. राजा अपनी शक्ति जनता से प्राप्त करता है तथा राजा को मनमानी करने का कोई अधिकार नहीं है।
2. हॉब्स (Locke) के पूर्ण प्रभुसत्ता ने कानूनी प्रभुसत्ता को जन्म दिया जिसका पूर्ण विकास आगे चलकर इंग्लैंड के विद्वान आस्टिन (Austin) ने किया।
3. लॉक (Locke) ने राज्य तथा सरकार में भेद (Difference) करके एक महत्वपूर्ण कार्य किया।
4. रूसो (Rousseau) के सामान्य इच्छा के सिद्धान्त ने लोकतंत्रीय शासन प्रणाली (Democracy) को जन्म दिया।

प्रश्न 16:राज्य की उत्पत्ति संबंधी मार्क्सवादी सिद्धान्त के मुख्य तत्व (Element) लिखें।

उत्तरः राज्य की उत्पत्ति से संबंधित मार्क्सवादी सिद्धान्त के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं :–

1. वर्ण संघर्ष (Class struggle) : राज्य वर्ग–संघर्ष की उत्पत्ति है। इस सिद्धान्त के अनुसार समाज में मौजूद परस्पर विरोधी वर्गों के बीच संघर्ष के कारण राज्य का जन्म हुआ है।
2. पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों का शोषण (Exploitation of Proleteriat) : राज्य सदैव शोषक (Exploiter) पक्ष का समर्थक रहा है। राज्य की सत्ता का प्रयोग शोषक वर्ग–पूंजीपतियों द्वारा–मजदूरों का शोषण करने के लिए किया जाता है।
3. शक्ति (Force) : राज्य का आधार इच्छा न होकर शक्ति है।
4. पूंजीपतियों के हितों की रक्षा (State protects capitalist and exploits proletariat) : राज्य कानून, सेना तथा पुलिस द्वारा जनता के हितों के स्थान पर पूंजीपतियों के हितों की रक्षा करता है। राज्य तो गरीबों मजदूरों तथा अन्य असहाय लोगों को कष्ट देने का साधन है।
5. राज्य–विहीन समाज (Stteless Society) : मार्क्सवादी सिद्धान्त राज्य की समाप्ति तथा सर्वहारा वर्ग की तानाशाही और राज्य विहिन समाज की कल्पना करता है।

प्रश्न 17:राज्य की उत्पत्ति के मार्क्सवादी सिद्धान्त की आलोचना (Criticism) के चार आधार लिखिए।

उत्तर : राज्य की उत्पत्ति के मार्क्सवादी सिद्धान्त की निम्नलिखित आधार पर आलोचना की गई है:–

1. निर्माण, नहीं विकास (Development not creation) : राज्य का निर्माण नहीं विकास हुआ है।
2. आर्थिक तत्व पर बल (Emphasis on economic factor) : मार्क्सवादी सिद्धान्त में आर्थिक तत्व पर बल दिया गया है।
3. आधार मानवीय इच्छा (Human will) : राज्य का आधार शक्ति नहीं, मानवीय इच्छा है।
4. सार्वजनिक कल्याण (General Welfare) : राज्य का उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण है।
5. काल्पनिक (Imaginary) : राज्य के लोप होने का विचार (Withering of state) काल्पनिक है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: "राज्य पूंजीपतियों के हाथ में एक ऐसा अस्त्र है जिससे वे जनता के बहुमत पर शासन करता है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) लीकॉक　　ख) ब्लंशली

ग) लेनिन　　घ) सर हेनरी मैन

प्रश्न 2: मार्क्स के द्वारा 'वर्ग संघर्ष' का वर्णन निम्नलिखित पुस्तक में किया गया–

क) लेवाथां　　ख) दास कैपिटल

ग) सोशल कान्ट्रैक्ट　　घ) समाजशास्त्र के सिद्धान्त

प्रश्न 3: "राज्य एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग का शोषण करने का साधन है।" यह कथन निम्न का है :–

क) मार्क्स　　ख) हीगल

ग) हाब्स　　घ) लॉक

प्रश्न 4: वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त का प्रतिपादन निम्नलिखित द्वारा किया गया–

क) हॉब्स　　ख) लॉक

ग) मार्क्स　　घ) रूसो

प्रश्न 5: निम्नलिखित सामाजिक समझौते के सिद्धान्त का समर्थक था–

क) रूसो　　ख) आस्टिन

ग) मार्क्स　　घ) लीकॉक

प्रश्न 6: विकासवादी सिद्धान्त के अनुसार राज्य की उत्पत्ति में निम्नलिखित का योगदान नहीं है–

क) रक्त संबंध　　ख) राजनीतिक चेतना

ग) शक्ति　　घ) ईश्वरीय इच्छा

प्रश्न 7: "पहले एक गृहस्थी, फिर एक पितृ–प्रधान परिवार, फिर समाज गोत्र के पुरूषों का एक कबीला और अन्त में एक राष्ट्र बना।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) सर हेनरी मैन ख) लीकॉक

ग) हॉब्स घ) लॉक

उत्तरः 1. ग, 2. घ, 3. क, 4. ग, 5. क, 6. घ, 7. ख।

राज्य के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण (State-Its Perspectives)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: राज्य के उदार–व्यक्तिवादी परिप्रेक्ष्य पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तरः राज्य के संबंध में उदार व्यक्तिवादी विचारधारा इस बात पर बल देती है कि व्यक्ति साध्य (End) है तथा राज्य साधन (Means)। इस दृष्टिकोण के अनुसार :–

1. साध्य व्यक्ति (Man is an end) : राज्य साधन है और व्यक्ति साध्य है।
2. विवेकशील (Rational) : व्यक्ति विवेकशील है और अपने हित को स्वयं सर्वोत्तम रूप से जानता है।
3. स्वतंत्रता (Freedom) : व्यक्ति को अपने कार्यों में स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।
4. कार्य कम–से–कम (Minimum Sunctions) : राज्य के कार्य कम–से–कम हों।
5. अधिकार और स्वतंत्रताएं (Rights and Freedom) : व्यक्ति को अधिक से अधिक अधिकार और स्वतंत्रताएं मिलनी चाहिए।
6. सीमित लोकतंत्रीय (Limited Democracy) : संवैधानिक सीमित लोकतंत्रीय शासन प्रणाली उचित है।

प्रश्न 2: राज्य के संबंध में मार्क्सवादी (Marxist) दृष्टिकोण पर एक नोट लिखें।

उत्तर : राज्य के संबंध में मार्क्सवादी दृष्टिकोण मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स (Karl Marks) के विचारों पर आधारित है, वह वैज्ञानिक समाजवाद का जनक है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार राज्य की प्रकृति :–

1. कोई नैतिक नहीं (Not Struggle) : राज्य कोई नैतिक संस्था नहीं।
2. वर्ग संघर्ष नहीं (Class Struggle) : राज्य समाज में विद्यमान वर्ग संघर्ष की उपज है।
3. एक उपकरण (A Tool) : समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग (Dominant Class) का एक उपकरण है।
4. शोषण का साधन (Exploitation) : राज्य शोषण का साधन है।
5. सामाजिक क्रान्ति (Social Revolution) : सामाजिक क्रान्ति अवश्यभ्भावी है।

6. श्रमिक वर्ग की तानाशाही (Dictartorship of Proletariat) : श्रमिक वर्ग की तानाशाही में तथा शोषक वर्ग की समाप्ति।

7. वर्ग विहिन समाज तथा राज्य का लोप (Classless and Stateless Society) : वर्ग–विहीन समाज में राज्य का लोप।

मार्क्सवादी के कार्य (Functions of a Marxist State) : मार्क्सवादी राज्य के कार्य निम्नलिखित हैं:–

1. राजनीतिक कार्य (Political Functions) : राज्य का लक्षण समाजवादी व्यवस्था को दृढ़ करना है।
2. आर्थिक कार्य (Economic Function) : अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण, निजी सम्पत्ति की समाप्ति।
3. लोक–कल्याणकारी कार्य (Welfare Functions) : श्रमिकों की दशा में सुधार।
4. सांस्कृतिक कार्य (Cultural Functions) : शिक्षा तथा सांस्कृतिक कार्यों पर सरकारी नियंत्रण।
5. न्यायिक कार्य (Judicial Functions) : न्याय–व्यवस्था का उद्देश्य समाजवादी व्यवस्था को पुष्ट करना।
6. अंतर्राष्ट्रीय कार्य (International Functions) : श्रमिक आन्दोलनों को बढ़ावा देना।

आलोचना (Criticism)

1. वर्ग संघर्ष की उपज नहीं : राज्य वर्ग संघर्ष की उपज नहीं।
2. लाभ : राज्य के कानूनों से सबको लाभ मिलेगा यह सन्देह है।
3. आर्थिक पक्ष पर जोर उचित नहीं : केवल आर्थिक पक्ष पर जोर उचित नहीं।
4. कल्याणकारी : राज्य द्वारा कल्याणकारी कार्य करना।
5. विशिष्ट वर्गों : नए विशिष्ट वर्गों का उद्‌य।
6. समाप्त होना संभव नहीं : राज्य का समाप्त होना संभव नहीं।

प्रश्न 3: राज्य के गांधीवाद सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : गांधीजी (Gandhiji) के अनुसार राज्य संगठित हिंसा का स्वरूप है जिस कारण से वे अराजकतावादियों की भांति राज्य के किसी भी रूप का विरोध करते थे। उनके अनुसार, व्यक्ति एक आत्मा है जबकि राज्य एक मशीन है जो अपनी शक्तियों का प्रयोग व्यक्तियों के विरोध में करता है। राज्य की पुलिस, सेना तथा जेल इत्यादि उनकी हिंसा के प्रतीक हैं। इसलिए गांधीजी राज्य को एक आवश्यक बुराई मानकर उसका अन्त करने का समर्थन करते थे। परन्तु वे इस बात को भी समझते थे कि राज्य को पूर्ण रूप से समाप्त कर देना असम्भव नहीं है। अतः वे उसे कम–से–कम कार्य देने का समर्थन करते थे। गांधीजी राज्य को साध्य न मानकर एक साधन मानते थे जिसका उद्देश्य व्यक्ति के विकास के लिए उचित वातावरण तैयार करना है। गांधीजी राज्य की शक्ति को बहुत सीमित करने के पक्षपाती थे।

प्रश्न 4: कल्याणकारी राज्य के उद्देश्यों का वर्णन करो।

उत्तरः कल्याणकारी राज्य के उद्देश्य : कल्याणकारी राज्य के निम्नलिखित उद्देश्य बताए गए हैं :–

1. व्यक्ति की आर्थिक सुरक्षा (Economic Security) : व्यक्ति की आर्थिक सुरक्षा की व्यवस्था करना। जब तक नागरिकों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं किया जाएगा, उनका विकास नहीं हो सकता।

2. राजनीतिक सुरक्षा (Political Security) : प्रतयेक नागरिक कीी राजनीतिक सुरक्षा की व्यवस्था हो, इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राज्य के कार्यों में भाग ले सकें। नागरिक को देश की समस्याओं के बारे में अपने विचारों को प्रकट करने तथा उनका प्रचार करने की स्वतंत्रता हो।

3. सामाजिक सुरक्षा (Social Security) : कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य है सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करना। इनके अनुसार राज्य उन सब भेदों को दूर करने का प्रयत्न करेगा जो जाति, वंश, रंग, धर्म, राष्ट्रीयता या अन्य किसी आधार पर आधारित है।

4. शांति स्थापना (To maintain peace) : कल्याणकारी राज्य के अन्य उद्देश्य संसार में शांति करना भी है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions)

प्रश्न 1: 'ए ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स' नामक पुस्तक निम्नलिखित विद्वान ने लिखी है :–

क) कार्ल मार्क्स　　ख) लास्की

ग) रूसो　　घ) हरबर्ट स्पैन्सर

प्रश्न 2: निम्नलिखित लेखक ने राज्य को 'सामाजिक समझौता' का परिणाम माना है–

क) लास्की　　ख) टॉलस्टाय

ग) मार्क्स　　घ) जॉन लॉक

प्रश्न 3: 'टू ट्रीटीज ऑन गवर्नमेन्ट' के लेखक थे–

क) जॉन लॉक　　ख) लास्की

ग) कार्ल मार्क्स　　घ) गांधी

प्रश्न 4: 'कम्यूनिस्ट मेनी फेस्टो' नामक पुस्तक निम्नलिखित में से किस विद्वान द्वारा लिखी गई–

क) हरबर्ट स्पैन्सर　　ख) एडम स्मिथ

ग) लास्की　　घ) कार्ल मार्क्स

प्रश्न 5: जॉन लॉक राज्य के निम्नलिखित दृष्टिकोण का समर्थक था–

क) सामाजिक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण　　ख) उदार–व्यक्तिवादी दृष्टिकोण

ग) मार्क्सवादी दृष्टिकोण　　घ) गांधीवादी दृष्टिकोण

प्रश्न 6: निम्नलिखित बहुलवाद का समर्थक था–

क) आस्टिन　　ख) महात्मा गांधी

ग) लास्की　　घ) जॉन लॉक

प्रश्न 7: वर्तमान काल में राज्य के संबंध में सबसे अधिक लोकप्रिय आधुनिक दृष्टिकोण कौन–सा है–

क) मार्क्सवादी　　ख) गांधीवादी

ग) उदार–व्यक्तिवादी　　घ) कल्याणकारी राज्य

उत्तर : (1) ख, (2) घ, (3) क, (4) घ, (5) ख, (6) ग, (7) घ।

प्रभुसत्ता
(Sovereignty)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: प्रभुसत्ता का क्या अर्थ है?

उत्तरः प्रभुसत्ता शब्द जिसे अंग्रेजी में सॉवरेनटि कहते हैं की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'सुपरोहनेस' (Superanus) से हुई है। लैटिन में इस शब्द का अर्थ है (Supreme) सर्वोच्च। राज्य की प्रभुसत्ता का अर्थ राज्य की उस शक्ति से है, जिसके कारण अपने क्षेत्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों तथा संस्थाओं पर असीमित रूप से अपना नियंत्रण रखता है, तथा बाहरी रूप से वह किसी अन्य शक्ति के अधीन नहीं होता।

प्रभुसत्ता की कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित है :–

1. बोदिन (Bodin) के अनुसार, "प्रभुसत्ता नागरिकों और प्रजा के ऊपर राज्य की वह उच्चतम सत्ता है जो कानूनों तथा अन्य प्रतिबन्धों से मुक्त हो।"
2. बर्गेस (Bugress) के अनुसार, "प्रभुसत्ता प्रत्येक प्रजाजन व उसके समुदाय पर राज्य की मौलिक, निरंकुश और असीमित शक्ति है।"
3. डयूगी (Duguit) के अनुसार, "प्रभुसत्ता राज्य को आदेश देने वाली शक्ति है, यह राज्य के रूप में संगठित राज्य की इच्छा है, इसे राज्य की भूमि पर रहने वाले सभी व्यक्तियों को बिना शर्त आज्ञा देने का अधिकार है।"
4. ग्रोशियस के अनुसार, "प्रभुसत्ता किसी में निहित वह सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति है जिसके कार्य किसी दूसरे के अधीन न हो तथा जिसकी इच्छा का कोई उल्लंघन न कर सके।"
5. जेलिनक (Jelinek) के अनुसार, "प्रभुसत्ता राज्य की वह विशेषता है जिसके अनुसार उसकी अपनी इच्छा के अतिरिक्त उस पर कोई कानूनी बंधन नहीं हो सकता और उसकी अपनी शक्ति के अतिरिक्त अन्य किसी शक्ति द्वारा उसे सीमित नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 2: प्रभुसत्ता के दो रूपों (Kinds) की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः प्रभुसत्ता के दो रूप हैं :–

1. आन्तरिक प्रभुसत्ता (Internal Sovereignty) : आन्तरिक प्रभुसत्ता का अर्थ है कि राज्य के क्षेत्र में रहने वाले सभी व्यक्ति तथा समुदाय राज्य के अधीन हैं और उनके लिए राज्य की आज्ञाओं का पालन करना अनिवार्य है।
2. बाहरी प्रभुसत्ता (External Sovereignty) : बाहरी प्रभुसत्ता का अर्थ है कि एक राज्य किसी अन्य राज्य अथवा बाहरी संस्था के अधीन नहीं है। राज्य बाहरी रूप से पूरी तरह स्वतंत्र है और किसी बाहरी शक्ति को राज्य को आदेश देने का तथा उसका पालन करवाने की शक्ति नहीं है।

प्रश्न 3: प्रभुसत्ता के कोई चार लक्षण बताओ।

उत्तरः प्रभुसत्ता के चार लक्षण निम्नलिखित हैं :–

1. स्थायित्व (Permanance) : जब तक राज्य बना रहता है, प्रभुसत्ता भी स्थायी रूप से बनी रहती है। राजा की मृत्यु होने पर अथवा सरकार के बदलने पर प्रभुसत्ता का अंत नहीं होता।

2. सर्वव्यापकता (Comprehensive) : इसका अर्थ यह है कि प्रभुसत्ता अपने क्षेत्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों, व्यक्ति–समुदायों तथा संस्थाओं पर लागू होती है।

3. अविच्छेदता (Indivisible) : इसका अर्थ है कि राज्य की प्रभुसत्ता को राज्य से अलग नहीं किया जा सकता। यदि इसे राज्य से अलग कर दिया जाए, तो राज्य ही समाप्त हो जाएगा।

4. अपवर्जिता (Inalieanability) : अपवर्जिता का अर्थ है कि एक राज्य में दो प्रभु नहीं हो सकते। एक राज्य में केवल एक ही प्रभुसत्ताधारी हो सकता है।

प्रश्न 4: कानूनी प्रभुसत्ता (Legal Sovereignty) का क्या अर्थ है?

उत्तरः कानूनी प्रभुसत्ता उस व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह के पास होती है। जिसके पास कानून बनाने अथवा कानून द्वारा अंतिम आदेश जारी करने का अधिकार होता है। न्यायालय द्वारा उन्हीं कानूनों के अनुसार न्याय किया जाता है, जो कानूनी प्रभुसत्ता द्वारा बनाए जाते हैं। इसके द्वारा बनाए गए कानूनों का उल्लंघन करने वालों को दण्ड दिया जाता है।

प्रश्न 5: राजनीतिक प्रभुसत्ता (Political Sovereignty) का क्या अर्थ है?

उत्तरः गिलक्रइस्ट (Gilchrist) के मतानुसार, "राजनीतिक प्रभुसत्ता का अर्थ है राज्य में कानून के पीछे रहने वाला सामूहिक प्रभाव। आधुनिक प्रतिनिध्यिात्मक सरकार में हम मोटे तौर पर इसे लोगों की इच्छा कह सकते हैं।" इंग्लैंड में संसद सैद्धान्तिक रूप से सभी कानून बना सकती है परन्तु व्यवहार में संसद को मतदाताओं की इच्छा के सामने झुकना पड़ता है। इस प्रकार कानून के निर्माण को प्रभावित करने वाले सभी तत्वों, मतदाता, राजनीतिक दल तथा प्रैस आदि को राजनीतिक प्रभुसत्ता में शामिल किया जाता है।

प्रश्न 6: आस्टिन के प्रभुसत्ता पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तरः जॉन आस्टिन (John Austin) का प्रभुसत्ता का सिद्धान्त कानूनी सिद्धान्त है, जिसका वर्णन उसने सन् (1832) में प्रकाशित अपनी पुस्तक "Lecture on Juris prudence" में किया है। आस्टिन द्वारा प्रभुसत्ता की जो परिभाषा दी है वह इस प्रकार हैः–

"यदि एक निश्चित सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, जो अपने ही समान किसी अन्य श्रेष्ठ की आज्ञा पालन का अभ्यस्त न हो तथा जिसकी आज्ञा का पालन उस समाज का अधिकांश भाग स्वाभाविक रूप से करता हो, तो वह मानव श्रेष्ठ उस समाज में प्रभु है तथा वह समाज (उस प्रभु–सहित) एक राजनीतिक और स्वतंत्र समाज होता है।"

आस्टिन की परिभाषा की मुख्य विशेषताएं (Characteristics) निम्नलिखित है :–

1. निश्चित (Determinate) : आस्टिन (Austin) के द्वारा प्रत्येक समाज में एक निश्चित सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह होता है।

2. आज्ञा पालन (Obedience) : समाज की जनता का अधिकांश भाग उस प्रभु की आज्ञाओं का स्वाभाविक रूप से पालन करता है।

3. निरंकुश (Dictator) : वह सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह अपने जैसे किसी अन्य प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं करता और इस प्रकार वह निरंकुश होता है।

4. अविभाज्य (Inivisible) : प्रभुसत्ता अविभाज्य है इसका विभाजन करने का अर्थ है इसे नष्ट करना।

5. स्त्रोत् (Source) : प्रभु ही कानून का स्त्रोत होता है।

प्रश्न 7: आस्टिन के प्रभुसत्ता के सिद्धान्त की आलोचना के कोई चार आधार बताओ।

उत्तरः आस्टिन (Austin) के प्रभुसत्ता के सिद्धान्त की आलोचना के आधार निम्नलिखित है :–

1. कानूनी प्रभुसत्ता (Legal Sovereignty) : आस्टिन की प्रभुसत्ता का सिद्धान्त केवल कानूनी प्रभुसत्ता का सिद्धान्त है और यह राजनीतिक प्रभुसत्ता की उपेक्षा करता है।

2. निश्चित (Determinate) : प्रभुसत्ता सदैव निश्चित नहीं होती।

3. निरंकुश (Dictator) : आलोचकों के अनुसार यह सिद्धान्त प्रभु को निरंकुश बनाता है जो कि ठीक नहीं है। राज्य की प्रभुसत्ता बाहरी रूप से अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और सन्धियों से तथा आंतरिक रूप से परम्पराओं, धर्म तथा जनमत आदि द्वारा सीमित होती है।

4. अविभाज्य नहीं (Not Indivisible) : आलोचकों का कहना है कि प्रभुसत्ता अविभाज्य नहीं है उनका कहना है कि संघात्मक राज्यों में प्रभुसत्ता केन्द्र तथा राज्यों में विभाजित होती है। इसी प्रकार प्रभुसत्ता सरकार के तीन अंगों–विधानमण्डल (Legislature), कार्य पालिका (Executive) तथा न्यायपालिका (Judiciary) में बंटी हुई होती है।

5. कानून का एकमात्र स्त्रोत नहीं (Not only source) : आस्टिन (Austin) के अनुसार कानून प्रभू का आदेश है परन्तु आलोचकों का कहना है कि प्रभु ही कानून का एकमात्र स्त्रोत् नहीं है। प्रथाएं तथा रीति–रिवाज भी कानून के स्त्रोत् हैं।

प्रश्न 8: प्रभुसत्ता के बहुलवादी सिद्धान्त पर नोट लिखें।

उत्तरः आस्टिन (Austin) के प्रभुसत्ता के सिद्धान्त के अनुसार राज्य के पास प्रभुसत्ता है और यह प्रभुसत्ता असीमित तथा अविभाज्य है। यह राज्य में रहने वाले सभी व्यक्तियों, समुदायों तथा संस्थाओं पर लागू होती है और बाहर से कोई भी अन्य शक्ति राज्य को आदेश देकर उनका पालन करवाने का अधिकार नहीं रखती। परन्तु कुछ लेखक क्रेव (Krabb), कोल (Cole), लॉस्की (Laski) तथा बार्कर (Barker) आदि मुख्य है, का मत है कि प्रभुसत्ता केवल राज्य के पास ही नहीं है बल्कि यह राज्य तथा अन्य समुदायों में बंटी हुई है। उनका कहना है कि मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं के विकास के लिए अनेक समुदायों का गठन किया जाता है। राज्य भी उसके जीवन के राजनीतिक पहलू को उन्नत करने के लिए समुदाय है तथा प्रभुसत्ता केवल राज्य के ही पास न होकर सभी समुदायों में निहित होती है। इनमें से कुछ समुदाय जैसे परिवार तथा चर्च आदि तो राज्य से भी पहले बने। जिस प्रकार राज्य अपने क्षेत्र के प्रभुसत्ताधारी है, उसी प्रकार से समुदाय भी अपने सदस्यों पर प्रभुसत्ता रखते हैं।

प्रश्न 9: प्रभुसत्ता के बहुलवादी सिद्धान्त की आलोचना (Criticism) के कोई चार आधार लिखें।

उत्तरः प्रभुसत्ता के बहुलवादी सिद्धान्त की निम्नलिखित आधार पर आलोचना की गई है :–

1. अराजकता (Anarchy) : यह बहु–समुदायवादियों के विचारों को मानकर राज्य की प्रभुसत्ता को दूसरी संस्थाओं में बांट दे तो उससे अराजकता व दुर्व्यवस्था फैलेगी।
2. राज्य आवश्यक है (State is necessary) : यद्यपि आज कई संस्थाएं व समुदाय सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हैं, फिर भी उनका स्थान राज्य के समान नहीं है।
3. संस्थाएं स्वतंत्र (Institutions would declare independence) : यदि समुदायों की सत्ता का सिद्धांत एक बार मान लिया तो अच्छे उद्देश्य के लिए ही नहीं परंतु बुरे व अनैतिक उद्देश्यों के लिए संगठित समुदाय भी स्वतंत्र स्थिति का दावा करने लगेंगे।
4. कानून राज्य से उच्च नहीं होता (Law is not above the state) : कुछ विचारकों का मत था कि कानून राज्य से ऊपर और उच्चतर होता है। परन्तु यह उचित नहीं माना जा सकता।

प्रश्न 10:प्रभुसत्ता के बहुवादी सिद्धान्त का क्या महत्व है?

उत्तरः बहुवादी सिद्धान्त का महत्व इस बात से है कि इसने राज्य की निरंकुश शक्ति के विरूद्ध आवाज उठाई और इस बात पर बल दिया कि व्यक्ति के जीवन में समुदायों का भी बहुत महत्व है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions)

प्रश्न 1: "Sovereignty" शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है?

क) सुप्रीम　　ख) सुपर

ग) सुपरऐनस　　घ) सोवियत

प्रश्न 2: निम्नलिखित में से कौन–सा तत्व प्रभुसत्ता का आवश्यक तत्व है?

क) कानून　　ख) धर्म

ग) राजनीतिक चेतना　　घ) सर्वव्यापकता

प्रश्न 3: निम्नलिखित में से कौन–सा प्रभुसत्ता का आवश्यक तत्व नहीं है?

क) निरंकुशता　　ख) स्थायित्व

ग) सर्वव्यापकता　　घ) लोकप्रियता

प्रश्न 4: 'लेक्चर्ज ऑन ज्यूरिस्प्रुडेन्स' नामक पुस्तक किस विद्वान ने लिखी है?

क) लॉस्की　　ख) माण्टेस्क्यू

ग) ऑस्टिन　　घ) बोदीन

प्रश्न 5: निरंकुश प्रभुसत्ता का सिद्धान्त किस विद्वान ने प्रस्तुत किया?

क) हॉब्स　　ख) लॉक

ग) माण्टेस्क्यू　　घ) रूसो

प्रश्न 6: लोक–प्रभुसत्ता का सिद्धान्त किस विद्वान द्वारा पेश किया गया?

क) हॉब्स ख) लॉस्की

ग) आस्टिन घ) रूसो

प्रश्न 7: "प्रभुसत्ता एक निश्चित सर्वोपरि व्यक्ति में होती है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) आस्टिन ख) लॉस्की

ग) सर हेनरी मेन घ) रूसो

प्रश्न 8: "प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोच्च इच्छा होती है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) डयूगी ख) लॉस्की

ग) विलोबी घ) बर्गेस

प्रश्न 9: "प्रभुसत्ता किसी में निहित वह सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति है जिसके कार्य किसी दूसरे के अधीन न हो, तथा जिनकी इच्छा का कोई उल्लंघन न कर सके।" प्रभुसत्ता की यह परिभाषा किस विद्वान ने दी है?

क) लॉस्की ख) ग्रोशियस

ग) पोलक घ) बर्गेस

प्रश्न 10:"प्रभुसत्ता प्रत्येक प्रजाजन व उनको समुदायों पर राज्य की मौलिक, निरंकुश तथा असीमित शक्ति होती है।" प्रभुसत्ता की यह परिभाषा किस विद्वान ने दी है?

क) पोलक ख) ब्रर्गेस

ग) डयूगी घ) ग्रोशियस

प्रश्न 11:"प्रभुसत्ता एक पूर्ण तत्व है" यह कथन किस विद्वान का है?

क) लॉवेल ख) बोदीन

ग) कोलहीन घ) फ्रीमैन

प्रश्न 12:"अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से स्वतंत्र सर्वोच्च प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य का विचार मानवता के लिए घातक है।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) लॉस्की ख) मैकाइवर

ग) गार्नर घ) सर हेनरी मेन

प्रश्न 13:निम्नलिखित में से कौन–सा विद्वान बहुलवादी है?

क) हॉब्स ख) रूसो

ग) लॉस्की घ) आस्टिन

प्रश्न 14:"चूंकि समाज संघीय है, सत्ता भी संघीय होनी चाहिए।" यह कथन किस विद्वान का है?

क) ग्रोशियस ख) आस्टिन

ग) लॉस्की घ) मैकाइवर

प्रश्न 15:बहुलवादियों का मुख्य दावा क्या है?

क) प्रभुसत्ता मतदाताओं में निकास करती है।

ख) प्रभुसत्ता जनता में निहित होती है।

ग) प्रभुसत्ता निश्चित सर्वोपरि व्यक्ति के पास होती है।

घ) प्रभुसत्ता राज्य के अतिरिक्त समुदायों के पास भी होती है।

प्रश्न 16:"कानून उच्च के द्वारा निम्नतर को दिया गया आदेश है।" यह कथन है–

क) जॉन आस्टिन ख) हॉब्स

ग) डायसी घ) स्टालिन

प्रश्न 17:लोक–प्रभुसत्ता निम्नलिखित में से किस में निहित है?

क) जनता ख) संसद सदस्यों

ग) संविधान घ) इनमें से किसी में नहीं

प्रश्न 18:प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य या तो मर चुका है या मरने वाला है।" यह कथन किस विद्वान का है।

क) क्रेब ख) मैकाइवर

ग) डयूगी घ) लॉस्की

प्रश्न 19: निम्नलिखित में से कौन–सा विद्वान बहुलवादी नहीं है?

क) बार्कर ख) डयूगी

ग) मेटलैंड घ) सर हेनरी मेन

प्रश्न 20: भारत में प्रभुसत्ता किसके पास है?

क) राष्ट्रपति ख) प्रधानमंत्री

ग) संसद तथा राज्य विधान मंडल घ) संविधान

उत्तरः 1. ग, 2. घ, 3. घ, 4. ग, 5. क, 6. घ, 7. क, 8. ग, 9. ख, 10. ख, 11. ग, 12. क, 13. ग, 14. ग, 15. घ, 16. क, 17. क, 18. ग, 19. घ, 20. घ।

लोकतंत्र अथवा प्रजातंत्र
(Democracy)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: लोकतंत्र (Democracy) का अर्थ बताइए।

उत्तरः आधुनिक युग लोकतंत्र का युग है। लोकतंत्र ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'डिमोस (Demos) और 'क्रेटिया' (Cratia) से मिलकर बना है। 'डिमोस' का अर्थ है, 'लोक' और 'क्रेटिया' का अर्थ है 'शासन' अथवा शक्ति। इसी प्रकार डेमोक्रेसी का शाब्दिक अर्थ वह शासन है जिसमें शक्ति या सत्ता लोगों के हाथें में हो। दूसरे शब्दों में लोकतंत्र सरकार का अर्थ है प्रजा का शासन (Rule of People)।

1. अब्राहम लिंकन (Abraham Lincoln) के अनुसार : "प्रजातंत्र जनता की, जनता के लिए और जनता द्वारा सरकार है।"
2. सीले (Seeley) के अनुसार : "प्रजातंत्र ऐसा शासन है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति भाग लेता है।"
3. डायसी (Dicey) के अनुसार : "प्रजातंत्र ऐसी शासन प्रणाली है, जिसमें शासक वर्ग समाज का अधिकांश भाग हो।"

प्रश्न 2: लोकतंत्र की विशेषताएं (Characteristics) लिखें।

उत्तरः लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

1. जनता का शासन (Rule of People) : प्रजातंत्र में शासन जनता द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर चलाया जाता है।
2. समानता (Equality) : प्रजातंत्र में प्रत्येक मनुष्य को समान समझा जाता है। सभी मनुष्यों को समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं। कानून के सामने सभी व्यक्ति समान होते हैं।
3. आलोचना का अधिकार (Right to Criticise) : प्रजातंत्र में शासन जनता के हित में चलाया जाता है।

प्रश्न 3: लोकतंत्र के गुण (Merits) लिखें।

उत्तरः प्रजातंत्र में निम्नलिखित गुण (Merits) पाए जाते हैं:–

1. जनमत पर आधारित (Based on Public Opinion) : प्रजातंत्र शासन जनमत पर आधारित है। अर्थात् शासन जनता की इच्छा के अनुसार चलाया जाता है।
2. समानता पर आधारित (Based on Equality) : प्रजातंत्र में सभी नागरिकों को समान माना जाता है। किसी भी व्यक्ति को जाति, धर्म, लिंग के आधार पर विशेष अधिकार नहीं दिए जाते।
3. राजनीतिक शिक्षा (Political Education) : लोकतंत्र (Democrary) में नागरिकों को राजनीतिक शिक्षा मिलती है।
4. क्रांति का डर नहीं (No threat of Revolt) : लोकतंत्र में क्रांति की संभावना बहुत कम होती है।
5. हितों की रक्षा करता है (Interest) : प्रजातंत्र समस्त जनता के हितों की रक्षा करता है।

प्रश्न 4: लोकतंत्र की हानियां (Drawbacks) लिखो।

उत्तरः जहां एक ओर लोकतंत्र में इतने गुण पाए जाते हैं वहीं दूसरी ओर इसमें निम्नलिखित हानियां पाई जाती है।

1. संख्या को अधिक महत्व (Quantity) : प्रजातंत्र में गुणों की अपेक्षा संख्या को अधिक महत्व दिया जाता है। लोकतंत्र में मूर्खों का शासन होता है।
2. अज्ञानियों, अयोग्य तथा मूर्खों का शासन है (Rule of Fools) : प्रजातंत्र को अयोग्यता की पूजा बताया जाता है। जनता में अधिकांश व्यक्ति अयोग्य, मूर्ख, अज्ञानी तथा अनपढ़ होते हैं।
3. उत्तरदायी शासन नहीं है (Not Responsible Government) : वास्तव में प्रजातंत्र अनुत्तरदायीी शासन है। चुनावों के पश्चात् नेता जानते हैं कि जनता उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती अतः अपनी मनमानी करते हैं।
4. अमीरों का शासन (Rule of Wealty) : लोकतंत्र कहने को तो प्रजा का शासन है परन्तु वास्तव में यह अमीरों का शासन है।
5. खर्चीला (Too Costly) : लोकतंत्र में आम चुनावों के प्रबंध पर बहुत धन खर्च हो जाता है।

प्रश्न 5: प्रत्यक्ष प्रजातंत्र (Direct Democracy) किसे कहते हैं?

उत्तरः प्रत्यक्ष प्रजातंत्र ही प्रजातंत्र का वास्तविक रूप है। जब जनता स्वयं कानून बनाए, राजनीति को निश्चित करे तथा सरकारी कर्मचारियों पर नियंत्रण रखे, उस व्यवस्था को प्रत्यक्ष प्रजातंत्र कहते हैं। परन्तु आधुनिक युग में बड़े–बड़े राज्य हैं, जिनकी जनसंख्या भी बहुतअधिक है और भू–भाग भी बड़ा है। अतः प्रत्यक्ष प्रजातंत्र संभव नहीं है।

प्रश्न 6: प्रत्यक्ष प्रजातंत्र की संस्थाओं के नाम लिखे और किन्हीं दो का वर्णन करें।

उत्तरः प्रत्यक्ष प्रजातंत्र की संस्थाएं कुछ देशों में मिलती है जैसे प्रस्तावाधिकार (Initiative), जनमत संग्रह (Referendum), प्रत्याहान या वापसी (Recall), लोकमत संग्रह (Plebiocite) आदि।

1. प्रस्तावाधिकार (Initiative) : इसके द्वारा मतदाताओं को अपनी इच्छा के अनुसार कानून बनवाने का अधिकार होता है। यदि मतदाताओं की एक निश्चिक संख्या किसी कानून को बनाने की मांग करे तो संसद अपनी इच्छा से उस मांग को रद्द नहीं कर सकती।
2. जनमत संग्रह (Referendum) : जनमत संग्रह द्वारा संसद के बनाए हुए कानून लोगों के सामने रखे जाते हैं। वे कानून तभी पास हुए समझे जाते हैं, यदि मतदाताओं का बहुमत उनके पक्ष में हो, नहीं तो वह कानून रद्द हो जाता है। स्विट्जरलैंड में यह नियम है कि कानून को लागू करने से पहले जनता की राय ली जाती है।

प्रश्न 7: प्रजातंत्र (Democracy) की सफलता के लिए आवश्यक शर्तों (Condition necessary for success of Democracy) का वर्णन करें।

उत्तर : लोकतंत्र के सफलतापूर्वक काम करने के लिए निम्नलिखित परिस्थितियों (Conditions) का होना आवश्यक समझा जाता है।

1. शिक्षित नागरिक (Educational Citizens) : प्रजातंत्र की सफलता के लिए शिक्षित नागरिकों का होना आवश्यक है। शिक्षित नागरिक प्रजातंत्र शासन की आधारशिला है। शिक्षा से ही नागरिकों को अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का ज्ञान होता है।
2. जागरूक नागरिकता (Vigilant Citizenship) : जागरूक नागरिकता प्रजातंत्र की सफलता की निरंतर देख–रेख ही स्वतंत्रता की कीमत है। नागरिक अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होने चाहिए।
3. प्रैस की स्वतंत्रता (Feedom of Press) : प्रैस की स्वतंत्रता प्रजातंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है।
4. सामाजिक समानता (Social Equality) : प्रजातंत्र की सफलता के लिए सामाजिक समानता होना आवश्यक है।

प्रश्न 8: स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रैस का लोकतंत्र में क्या महत्व है?

उत्तर : प्रैस को 'प्रजातंत्र का पहरेदार' (Watch dog of Democracy) कहा गया है। प्रजातंत्र शासन मेंलोगों को शासन की आलोचना करने का अधिकार होता है। यह अति आवश्यक है कि समाचार–पत्र, निष्पक्ष रूप में समाचार प्रस्तुत करें तथा निष्पक्ष आलोचना करें।

प्रजातंत्र के सिद्धान्त

(Theories of Democracy)

प्रश्न 9: उदावादी लोकतंत्र (Liberal Democracy) की विशेषताएं लिखो।

उत्तरः लोकतंत्र के उदारवादी सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

1. प्रतिनिधियात्मक सरकार (Representative) : उदारवादी लोकतंत्र में सरकार प्रतिनिधियात्मक होती है। लोग शासन चलाने के लिए एक निश्चित अवधि के पश्चात् अपने प्रतिनिधि चुनते हैं और जनता के प्रतिनिधि सरकार चलाते हैं।
2. जनता का शासन (Rule of People) : उदारवादी सिद्धांत के अनुसार प्रजातंत्र में जनता का शासन होता है।
3. शासन में भाग लेने का अधिकार (To participate in Government) : उदारवादी प्रजातंत्र में प्रत्येक नागरिक को शासन में भाग लेने का अधिकार प्राप्त होता है।
4. बहुमत का शासन (Rule of Majority) : उदारवादी प्रजातंत्र बहुमत का शासन है। प्रजातंत्र में प्रत्येक निर्णय बहुमत से लिया जाता है।
5. जनमत पर आधारित सरकार (Based on Public Opinion) : लोकतंत्र में सरकार जनमत पर आधारित होती है।
6. जनता का हित (Interest of People) : उदारवादी प्रजातंत्र में शासन जनता के हित के लिए चलाया जाता है। लोकतंत्र सामान्य हित का साधन है।

प्रश्न 9: बहुलवादी लोकतंत्र (Pluralist Democracy) की मुख्य विशेषताएं लिखो।

उत्तरः बहुलवादी लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

1. जनता शक्ति का स्त्रोत (Source of Power) : लोकतंत्र में बहुलवादी धारणा के अनुसार समस्त राजनीतिक शक्ति का स्त्रोत जनता है।
2. शक्तियों का पृथक्करण (Separation of Powers) : बहुलवादी लोकतंत्र में शक्तियों का पृथक्करण पाया जाता है।
3. प्रादेशिक विकेन्द्रीकरण (Provincial Decentralisation) : बहुलवादी लोकतंत्र शक्ति के प्रादेशिक तौर पर विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। ऐसा विभाजन हमें संघात्मक शासन प्रणाली (Federal form of Government) में मिलता है।
4. न्यायपालिका की स्वतंत्रता (Independence of Judiciary) : बहुलवादी लोकतंत्र में न्यायपालिका की स्वतंत्रता को बहुत महत्व दिया जाता है।

प्रश्न 10:लोकतंत्र के विशिष्ट (Elite) वर्गीय सिद्धांत का वर्णन करो।

उत्तरः लोकतंत्र को 'जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए' शासन माना जाता है। जनता अपने प्रतिनिधि चुनकर विधानमण्डल में भेजती है और जिस दल को बहुमत प्राप्त होता है, वही सरकार का निर्माण करता है। इस प्रकार परम्परागत लोकतंत्र 'बहुमत के शासन' में विश्वास करता है। परंतु पैरोटो (Perato), मोस्का (Mosca), बर्नहाम (Burnham), सी॰ राइट मिल्स (C.Wright Mills), मैनहीम (Manheim) इत्यादि विद्वानों ने परम्परागत लोकतंत्र की 'बहुमत के शासन' को चुनौती दी है और इस बात पर बल दिया है कि प्रजातंत्र में बहुमत के स्थान पर अल्पसंख्यक का शासन होता है। विशिष्ट वर्ग के सिद्धांत के समर्थकों का मानना है कि लोगों के शासन में वास्तव में विशिष्ट वर्ग का शासन होता है। 'विशिष्ट; या 'अभिजन' अपनी बुद्धि, बल या सामाजिक स्तर के कारण हर व्यवसाय में शिखर पर पहुंचे हुए होते हैं। चुनावों में जनता वास्तव में अभिजनों का ही चयन करती है। अभिजन वर्ग अल्पसंख्यक होता है और संगठित का अभाव पाया जाता है। लोकतंत्र में आम व्यक्ति का शासन नहीं होता बल्कि उसके चुने हुए 'अभिजनों' (Elite) का ही शासन होता है।

प्रश्न 11:लोकतंत्र के विशिष्ट (Elite) वर्गीय सिद्धांत की विशेषताएं बताओ।

उत्तर : विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं–

1. समाज के दो वर्ग (Two Classes) : इस सिद्धांत के अनुसार समाज में दो वर्ग होते हैं:– विशिष्ट वर्ग तथा जन साधारण वर्ग। विशिष्ट वर्ग प्रायः समाज का अल्पसंख्यक उच्च वर्ग होता है। क्योंकि इसमें समाज के अधिक योग्य होते हैं। और वे समाज के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाज जनसाधारण वर्ग आम व्यक्तियों का होता है और समाज में बहुमत इसी वर्ग का होता है।
2. अल्पसंख्यक वर्ग का प्रभुत्व (Influence of Minority) शासन का रूप कैसा भी क्यों न हो, शासन पर सदा अल्पसंख्यक वर्ग का ही प्रभुत्व होता है।
3. विशिष्ट वर्ग संगठित होता है (Elite is organised)

4. साधारण वर्ग अयोग्य, सुस्त व उदासीन होता है (Majority is lazy, unfit and indolent) : समाज का साधारण वर्ग सुरत–उदासीन, अयोग्य होता है। इस वर्ग में शासन करने की योग्यता नहीं होती। विशिष्ट वर्ग सत्ता पर अपना अधिकार कर लेता है।

5. विशिष्ट वर्ग के सदस्य सभी महत्वपूर्ण पदों को धारण किए रहते हैं (Important positions are held by)

प्रश्न 12:लोकतंत्र के विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत की आलोचना (Criticism) करें।

उत्तरः आधुनिक विद्वानों डेविस (Devis), वाकर (Walker), पैटमैन (Pattman), प्लामनाटज (Plamnatz), राबर्ट डहल (Robert Dahl) आदि ने इस सिद्धान्त की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की है–

1. प्रजातंत्र का गलत अर्थ बताता है, प्रजातंत्र को 'जनता का शासन' कहा जाता है। जबकि यह सिद्धांत प्रजातंत्र को 'अल्पसंख्यकों का शासन' मानता है। सारटोरी (Sartori) के विचार में अभिजन (Elite) जनता का नेतृत्व करते हैं, शासन नहीं करते हैं।

2. राबर्ट डहल (Robert Dahl) के विचारानुसार विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत के समर्थक यह बताने में असमर्थ रहे हैं कि विशिष्ट जनों के प्रभाव को कैसे नापा जाए।

3. विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत के समर्थकों का यह कहना है कि विशिष्ट जनों के हित आम जनता के हितों के विरोधी होते हैं, गलत है।

4. यह सिद्धांत यह नहीं बताता कि विशिष्ट वर्ग की उच्च योग्यता का आधार क्या होना चाहिए।

प्रश्न 13:लोकतंत्र के मार्क्सवादी सिद्धांत (Marxist Theory) की व्याख्या करें।

उत्तर : मार्क्स ने 'साम्यवादी घोषणा–पत्र में लोकतांत्रिक समाज के विषय में कहा है "यह वह संघ है जहां प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र तथा स्वछंद विकास सम्पूर्ण समाज के विकास की शर्त है।" मार्क्स के विचार में लोकतंत्र वहां है जहां कोई वर्ग नहीं, जहां आर्थिक चिन्तांए नहीं, जहां सब नागरिक समान तथा स्वतंत्र है, जहां उत्पादन के साधनों पर समाज का स्वामित्व है तथा जहां सबको अपनी आवश्यकतानुसार मिलता है। दूसरे शब्दों में साम्यवाद की स्थिति तथा लोकतंत्र की स्थिति एक समान है। मार्क्स उस समाज को ही लोकतांत्रिक मानता है जहां किसी प्रकार का शोषण न हो तथा न ही वर्ग हो।

प्रश्न 14:समाजवादी लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं लिखें।

उत्तर : समाजवादी लोकतंत्र को सर्वहारा लोकतंत्र या लोकतांत्रिक तानाशाही (Democratic Dictatorship) भी कहा गया है। समाजवादी लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:–

1. बहुमत का शासन (Rule of Majority) : बुर्जुआ लोकतंत्र में अल्पसंख्यक का शासन होता है, जबकि समाजवादी लोकतंत्र बहुमत का शासन होता है, क्योंकि श्रमिकों की बहुसंख्या होती है।

2. सर्वहारा का प्रजातंत्र (Democracy of Proletariat) : समाजवादी लोकतंत्र सर्वहारा का प्रजातंत्र है क्योंकि राज्य की शासन व्यवस्था पर श्रमिकों का नियंत्रण होता है और शासन सर्वहारा के हित में ही चलाया जाता है।

3. आर्थिक प्रजातंत्र की स्थापना (Establishment of Economic Democracy) : समाजवादी लोकतंत्र में

आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना भी होती है। समाजवादी व्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण होता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रम करना अनिवार्य होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार काम करेगा और उसे अपने आवश्यकता के अनुसार वेतन मिलेगा।

4. निजी सम्पत्ति का उन्मूलन (Abolition of Private Property) : समाजवादी लोकतंत्र में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया जाता है और उत्पादन के सभी साधनों पर राज्य का स्वामित्व होता है। उत्पादन का उद्देश्य लाभ कमाना नहीं होता बल्कि सामाजिक हित होता है।

5. सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना (Establishment of Social Democracy) : सभी लोगों को समान अधिकार दिए जाते हैं और जाति, धर्म, वंश, भाषा आदि के आधार पर नागरिकों में किसी प्रकार का भेद–भाव नहीं किया जाता।

6. साम्यवादी दल की तानाशाही (Dictatorship of Communist Party) : सर्वहारा की तानाशाही के दौरान शासन की बागडौर साम्यवादी दल के हाथ में रहती है। समाजवादी लोकतंत्र में एक ही दल होता है और अन्य दलों की स्थापना नहीं की जा सकती तथा साम्यवादी दल की तानाशाही होती है।

प्रश्न 15:समाजवादी लोकतंत्र का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर :समाजवादी लोकतंत्र की निम्नलिखित आधारों पर आलोचना की गई है–

1. सर्वहारा की तानाशाही (Dictatorship of Proletariat) : समाजवादी लोकतंत्र में एक वर्ग सर्वहारा की तानाशाही होती है जबकि प्रजातंत्र को समस्त जनता का शासन माना जाता है।

2. एक दल की तानाशाही (Dictatorship of one party) : आलोचकों का कहना है कि समाजवादी लोकतंत्र और साम्यवादी देशों में एक दल की तानाशाही और अन्य दलों की स्थापना नहीं की जा सकती।

3. शक्तियों का केन्द्रीयकरण (Centralisation of Powers) : साम्यवादी देशों में शक्तियों का केन्द्रीयकरण पाया जाता है।

4. विरोध नहीं (No Opposition) : साम्यवादी राज्यों में विरोधियों को अपने विरोध प्रकट करने का अवसर नहीं प्राप्त होता।

5. दिखावा (Elections a Formality) : साम्यवादी देशों में चुनाव एक दिखावा है क्योंकि एक ही दल के विभिन्न उम्मीद्वारों में से एक का चुनाव करना पड़ता है।

6. न्यायालय की स्वतंत्रता (No Independence of Judiciary) : साम्यवादी देशों में न्यायालय की स्वतंत्रता नहीं पाई जाती।

7. स्वतंत्रताएं छीनना : साम्यवादी राज्यों में आर्थिक लोकतंत्र के नाम पर राजनीतिक स्वतंत्रताएं छीन ली जाती हैं जबकि लोकतंत्र के लिए राजनीतिक लोकतंत्र का होना भी अनिवार्य है।

अन्त में हम कह सकते हैं कि साम्यवादी देशों में आर्थिक लोकतंत्र पाया जाता है परन्तु राजनीतिक लोकतंत्र का अभाव है और इसीलिए पश्चिम के विद्वानों ने साम्यवादी देशों के समाजवादी लोकतंत्र की कड़ी आलोचना की है। जहां तक मार्क्सवादियों के साम्यवादी लोकतंत्र की बात है वह एक कल्पना है क्योंकि राज्य के लोप होने की कोई संभावना नहीं है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions)

प्रश्न 1: आजकल कौन–सा लोकतंत्र अधिक प्रचलित है–

क) प्रत्यक्ष लोकतंत्र　　ख) प्रतिनिधि लोकतंत्र

ग) समाजवादी लोकतंत्र　　घ) विशिष्ट वर्ग लोकतंत्र

प्रश्न 2: अंग्रेजी भाषा का 'डैमोक्रेसी' किस शब्द से लिया गया है–

क) लातीनी भाषा के शब्द सिविक्स और सिविटास से

ख) यूनानी भाषा के शब्द पोलिस से

ग) लातीनी भाषा के शब्द नेशीओ से

घ) यूनानी भाषा के शब्द डीमास और क्रेटीआ से

प्रश्न 3: लोकतंत्र वह शासन प्रणाली है जहां राजनीतिक शक्ति होती है–

क) सब लोगों के पास　　ख) राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के पास

ग) राजनीतिज्ञों के पास　　घ) सरकारी अधिकारियों के पास

प्रश्न 4: प्रत्यक्ष लोकतंत्र शासन की वह प्रणाली है जहां–

क) लोग अपने प्रतिनिधि स्वयं निर्वाचित करते हैं।

ख) लोग देश के शासन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं।

ग) सरकारी अधिकारियों को लोग स्वयं नियुक्त करते हैं।

घ) सभी कानूनों की स्वीकृति लोगों से लेनी पड़ती है।

प्रश्न 5: यह किसने कहा था, "लोकतंत्र लोगों का लोगों द्वारा लोगों के लिए शासन है?"

क) लॉर्ड ब्राइस　　ख) अब्राहम लिंकन

ग) जे॰एस॰ मिल　　घ) कार्ल मार्क्स

प्रश्न 6: यह किसका कथन है, "लोकतंत्र ऐसी सरकार जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का हिस्सा होता है।"

क) जॉन सीले　　ख) लॉर्ड ब्राइस

ग) अब्राहम लिंकन　　घ) डायसी

प्रश्न 7: प्रजातंत्र की सफलता के लिए सहायक सिद्ध नहीं होता है–

क) एक–दलीय प्रणाली　　ख) बहु–दलीय प्रणाली

ग) राजनीतिज्ञ असैनिक अधिकारी　　घ) अल्पसंख्यकों का योग्य प्रतिनिधित्व

प्रश्न 8: प्रजातंत्र की सफलता के लिए कौन–सा तथ्य अनावश्यक है?

क) सुचेत नागरिक　　ख) दृढ़ धार्मिक विश्वास

ग) अच्छे संगठित राजनीतिक दल　　घ) स्वतंत्र व ईमानदार प्रैस

प्रश्न 9: लोकतंत्र की सफलता के लिए कौन–सी व्यवस्था आवश्यक नहीं है–

क) कानून का शासन　　ख) स्वतंत्र न्यायपालिका

ग) अल्पसंख्यकों की संतुष्टता　　घ) स्वतंत्र और ईमानदार

प्रश्न 10:कौन–सा तथ्य लोकतंत्र की विशेषता नहीं है?

क) स्वतंत्रता　　ख) समानता

ग) भ्रातृ भाव　　घ) राज्य धर्म

प्रश्न 11:कौन–सा कथन सत्य है?

क) लोकतंत्र में प्रैस का स्वतंत्र और निष्पक्ष होना अनिवार्य है।

ख) लोकतंत्र की सफलता केक लिए वचनबद्ध न्यायपालिका का अस्तित्व आवश्यक है।

ग) संचार के साधनों पर सरकारी नियंत्रण लोकतंत्र की सफलता के लिए एक आवश्यक शर्त है।

घ) लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का महत्व नहीं होता है।

प्रश्न 12:कौन–सा साधन प्रत्यक्ष लोकतंत्र का नहीं है?

क) जनमत संग्रह　　ख) प्रस्ताव अधिकार

ग) लोकमत संग्रह　　घ) प्रतिनिधियों का लोगों द्वारा चुनाव

प्रश्न 13:सर्वप्रथम किस विद्वान ने अपनी पुस्तक में प्रजातंत्रीय सिद्धातों को प्रस्तुत किया था?

क) लॉक　　ख) हॉब्स

ग) मिल　　घ)रूसो

प्रश्न 14:प्रजातंत्र के बहुलवादी सिद्धांत का समर्थन किसने किया है?

क) राबर्ट डहल　　ख) लिप्सेट

ग) मौरिस डुवर्जर　　घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 15:प्रत्यक्ष प्रजातंत्र का घर किसे कहा जाता है?

क) स्विटजरलैंड को　　ख) फ्रांस को

ग) अमेरिका को　　घ) इंग्लैंड को

प्रश्न 16:मार्क्सवाद का उद्देश्य है–

क) वर्गविहीन और राज्यविहिन समाज की स्थापना।

ख) पूंजीपतियों के शासन की स्थापना करना।

ग) बुद्धिजीवियों के शासन की स्थापना करना।

घ) संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना करना।

प्रश्न 17:सर्वहारा के अधिनायक तंत्र का समर्थन किसने किया है?

क) मोस्का ख) परेटो

ग) कार्ल मार्क्स घ) लॉस्की

प्रश्न 18:'अल्पतंत्र का लौह–नियम' किसके नाम के साथ जुड़ा हुआ है?

क) राबर्ट मिचल्स ख) परेटो

ग) राबर्ट डहल घ) मोस्का

प्रश्न 19:"लोग यद्यपि यह सोचे कि वे राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेते हैं परन्तु वास्तव में उनका प्रभाव मुख्यतः केवल चुनावों तक ही सीमित होता है। शक्ति के केन्द्र में एक ऐसा विशिष्ट वर्ग होता है जो अत्यधिक प्रभाव रखता है।"

क) रार्बट डहल ख) बरने

ग) राबर्ट मिचल्स घ) मोस्का

प्रश्न 20:राजनीतिक विशिष्ट वर्ग पाया जाता है–

क) अधिनायकवाद ख) अल्पतंत्र

ग) लोकतंत्र में घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 21: विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत के मुख्य समर्थक हैं–

क) परेटो ख) लॉक

ग) लॉस्की घ) टी॰एच॰ग्रीन

प्रश्न 22:कौन–सा तथ्य प्रजातंत्र की सफलता के लिए सहायक सिद्ध नहीं होता है?

क) लिखित संविधान ख) योग्य राष्ट्रीय नेता

ग) अच्छी अर्थव्यवस्था घ) बहु–दलीय प्रणाली

प्रश्न 23:प्रजातंत्र में किस प्रकार का शासन होता है?

क) जनता का शासन ख) सैनिकों का शासन

ग) न्यायधीशों का शासन घ) सामन्तों का शासन

प्रश्न 24:प्रजातंत्र के मार्क्सवादी सिद्धांत का समर्थन निम्नलिखित में से किसने किया है?

क) पैरेटो ख) ऐंजिल्स

ग) मोस्का घ) मिशेल

प्रश्न 25:सफल प्रजातंत्र के लिए आवश्यक है–

क) पक्षपातपूर्ण चुनाव प्रणाली ख) प्रैस पर पाबन्दी

ग) स्वस्थ दलीय प्रणाली घ) एक दलीय प्रणाली

प्रश्न 26:निम्नलिखित में से कौन–सी प्रजातंत्र को सफल बनाने की एक शर्त नहीं है?

क) सहयोग की भावना ख) सचेत नागरिकता

ग) सामाजिक एवं आर्थिक असमानता घ) राजनीतिक जागरूकता

प्रश्न 27:निम्नलिखित में से कौन प्रजातंत्र के बहुलवादी सिद्धांत का समर्थक नहीं है?

क) मोस्का ख) हंटर

ग) सराटोरी घ) बर्नसर

प्रश्न 28:प्रजातंत्र के मार्क्सवादी सिद्धांत से संबंधित कौन–सा कथन ठीक है–

क) उदारवादी प्रजातंत्र केवल एक ढोंग मात्र है।

ख) उदारवादी प्रजातंत्र पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली को प्रफुल्लित करता है।

ग) उदारवादी बुर्जुआ हितों की पूर्ति करता है।

घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर : 1.ख, 2.घ, 3.क, 4.ख, 5.ख, 6.क, 7.क, 8.ख, 9.ख, 10.घ, 11.क, 12.घ, 13.घ, 14.घ, 15.क, 16.क, 17.ग, 18.क, 19.ख, 20.घ, 21.क, 22.घ, 23.क, 24.ख, 25.ग, 26.ग, 27.क, 28.घ।

अध्याय –7

विकास और कल्याणकारी राज्य
(Development and Welfare State)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: विकास की अवधारणा से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तरः विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है ये एक व्यापक अवधारणा है, जिसे विभिन्न अर्थों में इस्तेमाल किया जाता है। विकास की अवधारणा की बहुत सी परिभाषाएं हैं। विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर ये कहा जा सकता

है कि विकास एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है, जिसमें आर्थिक सम्पदा में वृद्धि, असमानताओं में कमी और निर्धनता का उन्मूलन शामिल है। आधुनिक विकसित समाज में परिवर्तन करने की प्रक्रिया को विकास कहते हैं।

प्रश्न 2: विकास के मुख्य लक्षणों का वर्णन करें।

उत्तरः विकास के मुख्य लक्षण निम्नलिखित हैं :–

1. गतिशील (Mobility) : विकास की धारणा गतिशील और परिवर्तनशील है।
2. बहु–पक्षीय प्रक्रिया (Multipurpose process) : विकास एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है विकास में न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक, राजनीतिक तथा अन्य प्रकार के विकास भी शामिल होते हैं।
3. समृद्धि और उन्नति (Progressive) : विकास का अर्थ समृद्धि और उन्नति होता है। वर्तमान समाज अतीत के समाज से भिन्न है।
4. प्रौद्योगिकी से निकट का संबंध (Closely related with Industrialisation) : विकास की प्रौद्योगिकी से समीप का संबंध होता है। एक तकनीकी रूप से उन्नत समाज विकसित समाज कहलाता है।

प्रश्न 3: अल्पविकसित तथा विकासशील (Developing) देशों की समस्याओं का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तरः अल्पविकसित तथा विकासशील देशों की मुख्य समस्याएं निम्नलिखित हैं :–

1. रोटी, कपड़ा और मकान : अल्पविकसित तथा विकासशील देशों की सबसे महत्वपूर्ण समस्या जिसके लिए संघर्ष हो रहा है वह है रोटी, कपड़ा और मकान।
2. कृषि तथा औद्योगिक समस्याएं (Agricultural and Industrial) : अल्पविकसित तथा विकासशील देषों में कृषि पिछड़ी हुई और कृषि पुराने ढंग से की जाती है।
3. जनसंख्या (Over-Population) : अल्पविकसित तथा पिछड़े देशों में जनसंख्या में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है और अधिक जनसंख्या इन देशों की एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है।
4. जातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक समस्याएं (Caste, Cultural and Religious Problems) : स्थानिक समस्याओं के कारण अनेक देशों की एकता खतरे में पड़ गई है और अनेक देशों का विघटन हो गया है।
5. मानव अधिकारों की समस्या (Human Rights) : एक महत्वपूर्ण समस्या मानव अधिकारों की समस्या है।

प्रश्न 4: विकास के लक्ष्य (Aims and Objects) लिखें।

उत्तरः विकासशील देशों ने विकास के निम्नलिखित लक्ष्य रखे हैं :–

1. गरीब जनता की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।
2. लक्ष्य आर्थिक पुनर्निर्माण करके गरीबी तथा बेरोजगारी को दूर करना है।
3. विकासशील देशों का लक्ष्य प्राकृतिक साधनों का विकास करना है।
4. विकासशील देश लोगों के आर्थिक तथा समाज कल्याण के कार्यों को निम्न स्तर के लोगों तक पंहुचाने का लक्ष्य रखते हैं।
5. आर्थिक विकास की ऊंची दर को प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है।

प्रश्न 5: 'बाजार अर्थव्यवस्था (Market Economy) से विकास का क्या अभिप्राय है?

उत्तरः समस्त विश्व में इस बात की चर्चा हो रही है कि विकास का सर्वोत्तम मार्ग यह है कि अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया जाए। 'बाजार अर्थव्यवस्था' का अर्थ है कि अर्थव्यवस्था को प्रतियोगिता, अहस्तक्षेप नीति (Laissez-Faire) तथा मांग व पूर्ति की शक्तियों का सामान्य प्रक्रिया पर छोड़ दिया जाना चाहिए। व्यापार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राष्ट्र को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और विश्व बाजार की शक्तियों के अनुसार व्यापार करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। बाजार अर्थव्यवस्था में मुख्यतः निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं :–

1. मुक्त उद्यम, 2. विदेशी पूंजी निवेश, 3. विदेशी तकनीक, 4. मुक्त व्यापार,
5. आधुनिकीकरण 6. उदारीकरण व विश्वीकरण।

प्रश्न 6: विकास के समाजवादी मॉडल (Socialist-Model) की मुख्य विशेषताएं लिखें।

उत्तर : विकास के समाजवादी मॉडल की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

1. उत्पादन तथा वितरण के साधनों को समस्त समाज की सम्पत्ति मानता है। अतः समाजवादी उत्पादन तथा वितरण के साधनों पर राज्य का नियंत्रण करना चाहते हैं।
2. व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व देता है। समस्त समाज का विकास करना चाहिए।
3. नियोजित अर्थव्यवस्था का समर्थन करता है। नियोजित अर्थव्यवस्था के द्वारा ही देश का विकास किया जा सकता है।
4. आर्थिक क्षेत्र में स्वतंत्र प्रतियोगिता समाप्त करके सहयोग की भावना पैदा करने के पक्ष में हैं।
5. मजदूरों का शोषण नहीं किया जाएगा और उनके हितों की सुरक्षा के लिए कानून बनाए जाएंगे।

प्रश्न 7: विकास के गांधीवादी मॉडल (Gandhian Model) की मुख्य विशेषताएं लिखें।

उत्तरः विकास के गांधीवादी दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

1. मानव सेवा (Service of Huanity) : गांधी जी के अनुसार ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन मानव सेवा है। मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।
2. विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था (Decentralised Economy) : गांधी जी का विकास का मॉडल आर्थिक विकेन्द्रीयकरण पर बल देता है।
3. न्यासिता की अवधारणा (Trustiership) : गांधी जी सभी व्यक्तियों को विकास के समान अवसर देने के पक्ष में थे। उनका मानना था जिस मनुष्य के पास धन है वह उसे समाज की अमानत (Trustee) समझेगा और उसका प्रयोग जन–कल्याण के लिए करेगा।
4. मानव भौतिक प्राणी नहीं है (Man is not only materialistic) : गांधी जी के अनुसार मानव केवल भौतिक प्राणी नहीं है, मनुष्य को अपनी आत्मा का विकास करके जन–कल्याण के कार्य करने चाहिए।
5. रोटी के लिए श्रम (Physical Labour Necessary) : गांधी जी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका के लिए कुछ शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिए।

6. सामाजिक (Social) : गांधीवादी मॉडल सामाजिक बुराइयों को विकास के मार्ग में बाधक मानता है और उन्हें दूर करने पर बल देता है।

प्रश्न 8: कल्याणकारी राज्य (Welfare State) का अर्थ एवं परिभाषा लिखो।

उत्तरः साधारण शब्दों में कल्याणकारी राज्य वह है जो जनता के जीवन को सुखी तथा समृद्ध बनाने के लिए कार्य करे।

1. कोल (Cole) के अनुसार, "कल्याणकारी राज्य एक ऐसा समाज है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम जीवन स्तर और समान अवसर प्राप्त होता है।"
2. कैंट (Kant) के शब्दों में, "कल्याणकारी राज्य वह राज्य है जो अपने नागरिकों के लिए विस्तृत मात्रा में सामाजिक सेवाएं प्रदान करता है।
3. अबाह्म (Abraham) के अनुसार, "कल्याणकारी राज्य वह समाज है जहां राज्य की शक्ति का प्रयोग निश्चयपूर्वक साधारण आर्थिक व्यवस्था को इस प्रकार बदलने के लिए किया जाता है कि सम्पत्ति का अधिक–से–अधिक वितरण हो।"

   संक्षेप में कल्याणकारी राज्य राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिए व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करता है। ताकि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का निकास कर सके।

प्रश्न 9: कल्याणकारी राज्य (Welfare State) के उद्देश्य (Aims and Objects) क्या हैं?

उत्तरः कल्याणकारी राज्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. सामाजिक सुरक्षा (Social Security) : कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना होता है। कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य समाज में रंग, जाति, धर्म के भेदों को दूर करके सभी व्यक्तियों को सामाजिक समानता देना होता है।
2. आर्थिक सुरक्षा (Economic Security) :कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य अपने नागरिकों की आर्थिक दशा में सुधार करना होता है। कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य आर्थिक असमानता को कम करना और गरीबी को दूर करना होता है।
3. राजनीतिक सुरक्षा (Political Security) : कल्याणकारी राज्य में नागरिकों को शासन में भाग लेने के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं। कानून के सामने सब व्यक्तियों को समान माना जाता है।
4. दूसरे राज्य से मित्रता करना (To maintain friendly relations with other countries): कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य दूसरे देशों से मित्रता के संबंध स्थापित करना होता है।

प्रश्न 10:कल्याणकारी राज्य की विशेषताएं लिखो।

उत्तरः कल्याणकारी राज्य की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैः–

1. व्यक्तियों की आय में विषमता का अन्त (Reduction in disparity of Income) : कल्याणकारी राज्य में जिसकी जितनी आय अधिक होती है उस पर उतने ही अधिक कर लगाये जाते हैं। इस प्रकार समानता लाने का प्रयत्न किया जाता है।

2. बूढ़ों, अपाहिजों, अनाथों इत्यादि की सहायता (To help old, handicapped and orphan) : कल्याणकारी राज्य में जरूरतमंद लोगों की सहायता का आश्वासन दिया जाता है।

3. सार्वजनिक शिक्षा (Universal Education) : कल्याणकारी राज्य सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था करता है।

4. व्यक्तियों के न्यूनतम जीवन–स्तर की व्यवस्था (Arrangement for fulfilling basic needs) : कल्याणकारी राज्य की विशेषता यह है कि सभी नागरिकों के न्यूनतम जीवन–स्तर की व्यवस्था की जाती है।

प्रश्न 11:राज्य के अनिवार्य (Compulsory) कार्य (Functions) कौन–से हैं?

उत्तर :1. जीवन तथा सम्पत्ति की रक्षा करना (To protect life and property) : लोगों के जीवन तथा सम्पत्ति की रक्षा करना राज्य का आवश्यक कार्य है।

2. बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा (To safeguard against external dagression) : राज्य अपने नागरिकों की बाहरी आक्रमणों से रक्षा करता है। राज्य अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सेना का प्रबंध करता है।

3. कानून तथा व्यवस्था की स्थापना करना (To maintain law and order) : देश में कानून तथा व्यवस्था बनाए रखना राज्य का महत्वपूर्ण आवश्यक कार्य है। इसके लिए पुलिस की व्यवस्था की जाती है।

4. कर लगाना (To impose taxes) : गैटेल (Gettel) के अनुसार मुद्रा निश्चित करना, कर लगाना तथा कर इकट्ठा करना राज्य का अनिवार्य कार्य है।

5. दूसरे राज्यों से संबंध स्थापित करना (To maintain good neighbor relations) : कोई भी राज्य आत्म निर्भर नहीं है। विश्व में शांति को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक देश के दूसरे देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध हो।

प्रश्न 12:राज्य के ऐच्छिक (Voluntary) कार्य (Functions) लिखें।

उत्तर :वर्तमान राज्यों के महत्वपूर्ण ऐच्छिक कार्य निम्नलिखित हैं :–

1. शिक्षा का प्रचार (Spread of Education) : वर्तमान राज्य का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा का प्रसार करना है। प्रत्येक राज्य शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की स्थापना करता है।

2. स्वास्थ्य तथा सफाई (Health and Sanitation) : देश की उन्नति के लिए नागरिकों का स्वास्थ्य अच्छा होना अनिवार्य है। इसलिए राज्य अपने नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए अस्पताल तथा स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना करता है।

3. गरीबी और बेरोजगारी को दूर करना (To remove poverty and unemployment) : वर्तमान राज्य अपने नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा करने के लिए अनेक कार्य करते हैं। राज्य बेरोजगारी को दूर करने के लिए प्रयत्न करता है। प्रत्येक व्यक्ति को कार्य देना राज्य का कर्त्तव्य समझा जाता है।

4. सामाजिक सुरक्षा (Social Security) : वर्तमान राज्य बुढ़ापे, दुर्घटना, बीमारी तथा बेकारी से दुःखी व्यक्तियों के लिए सुरक्षा का प्रबंध करता है।

5. कृषि की उन्नति (To promote agriculture) : वर्तमान राज्य कृषि की उन्नति के अनेक कार्य करता है। सरकार कृषकों को अच्छे बीज, खाद, ट्रेक्टर तथा ऋण देने की सुविधा प्रदान करती है।

प्रश्न 13:राज्य सामाजिक आर्थिक परिवर्तन (Socio-Economic Change) के साधन के रूप में किस तरह कार्य करता है।

उत्तर :राज्य सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन है :–

1. सामाजिक सुरक्षा (Social Security) : सामाजिक सुरक्षा का अर्थ बुढ़ापे, बीमारी, बेकारी और अयोग्य होने की स्थिति में राज्य की ओर से सुरक्षा व्यवस्था करना है।
2. सामाजिक बुराइयों को दूर करना (To eliminate Social evils) : राज्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कानून के साथ प्रचार के माध्यम को अपनाता है। आज राज्य जाति प्रथा को रोकने में सहायक सिद्ध हो रहा है।
3. राज्य आर्थिक परिवर्तन के साधन के रूप में (Vehicle for Economic Change) : आधुनिक युग में राज्य ही आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने का सबसे अधिक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। राज्य उद्योग तथा व्यापार को नियमित करने के लिए अनेक कानूनों का निर्माण करता है। राज्य आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए आयात–निर्यात (Import-Export) को नियमित करता है तथा गरीबी को दूर करने का प्रयास करता है।

प्रश्न 14:आधुनिक कल्याणकारी राज्य की विकासात्मक गतिविधियों का वर्णन करो।

उत्तर :आधुनिक राज्य की प्रमुख विकासकारी गतिविधियां इस प्रकार हैं:–

1. प्राकृतिक साधनों का विकास (Development of Natural Resources) : देश के आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक साधनों का विकास होना भी अनिवार्य है। इसीलिए राज्य वनों की रक्षा तथा सफाई का प्रबंध करता है। बिजली के उत्पादन की व्यवस्था करता है तथा खनिज पदार्थों की खुदाई की ओर विशेष ध्यान देता है।
2. कृषि की उन्नति (To increase agricultural production) : कृषि की उन्नति के लिए कार्य करना राज्य का कर्त्तव्य है। कृषि करना लोगों का ही कार्य है, पर राज्य को कृषकों की हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए। इसके लिए राज्य को किसानों को अच्छे बीज, खाद, ट्रेक्टर तथा ऋण देने चाहिए। सरकार को चाहिए कि किसानों को वैज्ञानिक ढंग से जानकारी दिलवाए।
3. औद्योगिक विकास (Industrial Development) : कृषि के विकास के साथ–साथ औद्योगिक विकास के लिए भी आवश्यक कदम उठाना राज्य का विकासकारी कार्य है।
4. व्यापार, उद्योग और वाणिज्य नियमित करना (To regulate trade and commerce, import and export) : आधुनिक राज्य व्यापार, उद्योग तथा वाणिज्य इत्यादि को नियमित करने के लिए नियम व कानून बनाता है आयात व निर्यात को कानूनों द्वारा नियमित करता है।

प्रश्न 15:कल्याणकारी राज्य के प्रभाव (Impact) पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर :कल्याणकारी राज्य का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। कल्याणकारी राज्य ने गरीबी को दूर करने और बेरोजगारी को दूर करने में काफी सफलता प्राप्त की है। श्रमिकों का जीवन स्तर और किसानों का जीवन स्तर ऊंचा हुआ है। भारत में कल्याणकारी राज्य का प्रभाव काफी पड़ा है। शिक्षा का प्रसार हुआ है। और बच्चों को

प्राइमरी शिक्षा निशुल्क और अनिवार्य रूप से दी जाती है। आजकल बैंक गरीब किसानों तथा पढ़े–लिखे बेरोजगार नौजवानों को ब्याज पर ऋण दे रहे हैं। यद्यपि कल्याणकारी राज्य के कारण काफी उन्नति हुई है, तथापि अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। भारत की अधिकांश जनता गरीब है और करोड़ों बेरोजगार हैं। आर्थिक असमानता बहुत अधिक है। सामाजिक तथा आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए तेज कदम उठाने होंगे और सरकार को जाति, वर्ग, समुदाय आदि बातों से ऊपर उठकर सभी के कल्याण के लिए काम करना होगा, ताकि सच्चे कल्याणकारी राज्य की स्थापना की जा सके।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice Questions)

प्रश्न 1: राजनीतिक विकास संस्कृति का विसरण और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई मांगों के अनुकूल बनाने, उन्हें उनके साथ मिलाने या उनके साथ सामंजस्य बैठाना है। ये शब्द किसने कहे?

क) लुसियन पाई　　ख) डायनेपट

ग) ऐंजल्स　　घ) मार्क्स

प्रश्न 2: विकास समाज में उच्चस्तरीय अनुकूल की क्षमता है। यह कथन किसका है?

क) मैकेन्जी　　ख) ऐंजल्स

ग) राबर्ट डहल　　घ) कार्ल मार्क्स

प्रश्न 3: "अब विलास की वस्तुएं और आवश्यक वस्तुओं का अन्तर समाप्त हो गया है, क्योंकि अब आम जनता भी विलास की वस्तुओं का उपभोग करने लगी है"– यह विचार किसका है?

क) कार्ल मार्क्स　　ख) गालब्रेथ

ग) डेविड हैल्थ　　घ) लॉस्की

प्रश्न 4: विकास का लक्ष्य है–

क) न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना

ख) प्राकृतिक साधनों का विकास करना

ग) समाज कल्याण के कार्य करना

घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5: वर्तमान राज्य है–

क) कल्याणकारी　　ख) अहितकारी

ग) अधिनायकवादी　　घ) व्यक्तिवादी

प्रश्न 6: कैनेथ और आर्गेन्सकी के अनुसार विकास की एक अवस्था सही नहीं है–

क) राजनीतिक एकीकरण　　ख) जनसंख्या में वृद्धि

ग) औद्योगीकरण　　घ) लोक कल्याण

प्रश्न 7: बाजार व्यवस्था की मुख्य विशेषता है–

क) उत्पादन के साधनों पर समस्त समाज का नियंत्रण।

ख) बड़े–बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाना।

ग) मुक्त उद्यम

घ) लाईसैंस की नीति।

प्रश्न 8: अल्प विकसित तथा विकसित देशों की मुख्य समस्या है–

क) रोटी, कपड़ा और मकान ख) जनसंख्या

ग) कृषि तथा औद्योगिक विकास घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 9: पूंजीवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप में किसका उदय हुआ?

क) अराजकतावाद ख) समाजवाद

ग) अल्पतंत्रवाद घ) लोकतंत्र

ड़) धर्मों को सरकार द्वारा संरक्षण

प्रश्न 10:समाजवाद की मुख्य विशेषता है–

क) पूंजीवाद को प्रोत्साहित करना ख) खुली प्रतियोगिता

ग) समानता पर विश्वास घ) व्यक्ति को महत्ता

प्रश्न 11:लोकतंत्रीय समाजवाद की मुख्य विशेषता है–

क) हिंसा द्वारा समाजवाद की स्थापना करना।

ख) क्रांति द्वारा समाजवाद की स्थापना करना।

ग) शांतिपूर्ण तथा संवैधानिक साधनों द्वारा समाजवाद की स्थापना करना।

घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 12:"राज्य का उद्देश्य बाधाओं को बाधित करना है" यह कथन किसका है?

क) टी॰एच॰ ग्रीन ख) थामस हॉब्स

ग) लीकॉक घ) लॉस्की

प्रश्न 13:"समाजवादी एक ऐसा टोप है जो अपना आकार खो चुका है क्योंकि उसे प्रत्येक व्यक्ति पहनता है"– यह कथन किसने कहा?

क) सी॰ई॰एम॰ जोड़ ख) टी॰एच॰ ग्रीन

ग) लॉस्की घ) लॉक

प्रश्न 14:यह किसने कहा है कि "कल्याणकारी राज्य वह राज्य है जो अपने नागरिकों के लिए विस्तृत मात्रा में सामाजिक सेवा प्रदान करता है।"

क) कैंट ख) कोल

ग) हॉबमैन घ) अब्राहम

प्रश्न 15:"कल्याणकारी राज्य एक ऐसा समाज है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम जीवन स्तर और समान अवसर प्राप्त होता है।" यह कथन किसका है?

क) कोल ख) ग्रीन

ग) लॉस्की घ) अब्राहम

प्रश्न 16:आधुनिक राज्य है, एक–

क) कल्याणकारी राज्य ख) पुलिस राज्य

ग) नगर राज्य घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 17:निम्नलिखित में से राज्य का कौन–सा ऐच्छिक कार्य है?

क) कानून तथा व्यवस्था की स्थापना करना

ख) देश की सुरक्षा करना

ग) शिक्षा का प्रसार करना

घ) कर लगाना

प्रश्न 18:निम्नलिखित में से राज्य का कौन–सा कार्य अनिवार्य है?

क) शिक्षा का प्रसार करना ख) कानून तथा व्यवस्था की स्थापना

ग) कृषि में सुधार करना घ) गरीबी दूर करना

प्रश्न 19:निम्नलिखित में से कौन–सा कल्याणकारी राज्य का कार्य नहीं है?

क) लोगों को फैशन बताना ख) सामाजिक सुरक्षा

ग) आर्थिक सुरक्षा घ) राजनीतिक सुरक्षा

प्रश्न 20:कल्याणकारी राज्य का कार्य है–

क) युद्ध करना

ख) हिंसा में विश्वास करना

ग) आर्थिक व सामाजिक न्याय की स्थापना करना

घ) निरंकुशता की स्थापना करना।

प्रश्न 21:कल्याणकारी राज्य प्रदान करता है–

क) आर्थिक कल्याण

ख) सामाजिक कल्याण

ग) आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक कल्याण

घ) धार्मिक कल्याण

प्रश्न 22:आजकल राज्य के कार्यों से संबंधित कौन–सी विचारधारा सबसे अधिक लोकप्रिय है?

क) समाजवादी ख) व्यक्तिवादी

ग) साम्यवादी घ) कल्याणकारी राज्य की विचारधारा

प्रश्न 23:निम्नलिखित में से कौन सा तत्व कल्याणकारी राज्य के मार्ग में बाधा बनता है?

क) जागरूक नागरिक ख) शिक्षा का प्रसार

ग) अधिक जनसंख्या घ) प्रैस की स्वतंत्रता

प्रश्न 24:राज्य आर्थिक परिवर्तन के साधन के रूप में क्या कार्य करता है?

क) सामाजिक बुराइयों को दूर करता है।

ख) सामाजिक समानता स्थापित करने का प्रयास करता है।

ग) शिक्षा का प्रसार करना।

घ) आर्थिक योजनाओं का निर्माण करना।

प्रश्न 25:निम्नलिखित में से कौन–सा लक्ष्य आधुनिक कल्याणकारी राज्य का है

क) आर्थिक सुरक्षा ख) राजनीतिक सुरक्षा

ग) सामाजिक सुरक्षा घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 26:निम्नलिखित में से कौन–सा राज्य का अनिवार्य कार्य नहीं है?

क) कानून और व्यवस्था बनाए रखना ख) देश की सुरक्षा करना

ग) शिक्षा की व्यवस्था करना घ) न्याय की व्यवस्था करना

प्रश्न 27:कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य है–

क) सभी नागरिकों को समान वेतन देने की व्यवस्था करना

ख) पिछड़े वर्गों की आर्थिक दशा सुधारना

ग) उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण करना

घ) सम्पूर्ण समाज के लिए भलाई के लिए करना

उत्तरः 1.क, 2.क, 3.ख, 4.घ, 5.क, 6.ख, 7.ग, 8.ख, 9.ख, 10.ग, 11.ग, 12.क, 13.क, 14.क, 15.क, 16.क, 17.ग, 18.ख, 19.क, 20.ग, 21.ग, 22.घ, 23.ग, 24.घ, 25.ग, 26.ग, 27.घ

अध्याय –8

सामाजिक परिवर्तन
(Social Change)

लघुतरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: सामाजिक परिवर्तन से आप क्या समझते है?

उत्तरः अर्थ : साधारण शब्दों में समाज में होने वाले परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। सामाजिक परिवर्तन की विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। कुछ मुख्य परिभाषाएं निम्नलिखित हैं:–

1. गिलिन और गिलिन (Gillin and Gillin) के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन जीवन के स्वीकृत रीतियों में परिवर्तन हैं, चाहे वह भौगोलिक परिस्थितियों में, सांस्कृतिक साधनों में, जनसंख्या की अथवा विचारधाराओं की रचना में परिवर्तन से हुए हों या समूह के अंदर ही प्रसार अथवा आविष्कार से लाए गए हों।"
2. डेविस (Davis) के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन से अभिप्राय सामाजिक संगठन के कार्य और ढांचे में परिवर्तन से है।"
3. जॉनसन (Johnson) के अनुसार, "अपने मौलिक अर्थ से सामाजिक परिवर्तन का अर्थ सामाजिक ढांचे में परिवर्तन होता है।"
4. डॉसन तथा गेटिस (Danison and Gatis) ने लिखा है, "सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन है क्योंकि समस्त सांस्कृतिक अपनी उत्पति, अर्थ एवं प्रयोग में सामाजिक है।"

प्रश्न 2:सामाजिक परिवर्तन के प्रकार बताए।

उत्तर : सामाजिक परिवर्तन के निम्नलिखित प्रकार हैं–

1. सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन (Change in Values) : अनेक संरचनात्मक परिवर्तनों में से सामाजिक मूल्यों में होने वाला परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण है।
2. संस्थात्मक परिवर्तन (Institutional Change) : सम्पति एवं पुरस्कार के वितरण में परिवर्तन संस्थात्मक परिवर्तन संरचनात्मक परिवर्तन का स्वरूप है।
3. विशिष्ट व्यक्तियों और कार्यकर्त्ताओं में परिवर्तन (Change in Elite) : समाज में कार्य करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों और कार्यकर्त्ताओं में परिवर्तन से संरचनात्मक परिवर्तन भी हो सकते हैं।
4. योग्यताओं अथवा मनोवृत्ति में परिवर्तन (Change in Qualifications or Mentality) : कार्यकर्त्ताओं की योग्यताओं अथवा मनोवृत्ति में परिवर्तन।

प्रश्न 3: सामाजिक परिवर्तन की मुख्य विशेषताएं लिखें।

उत्तर : 1. सामाजिक परिवर्तन सर्वव्यापक तथ्य है (Universal Phenomena) : सामाजिक परिवर्तन सभी समाजों में होते हैं। कोई भी समाज पूर्ण रूप से स्थिर नहीं रह सकता है। जनसंख्या में परिवर्तन, औद्योगिक वृद्धि भौतिक उपकरणों, विचारधाराओं आदि में परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं के ढांचे को प्रभावित करते हैं।

2. सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति विभिन्न समाजों से विभिन्न होती है (Social Change is not uniform) : सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति प्रत्येक समाज में अलग–अलग होती है। राबर्ट बायर स्टैड के शब्दों में "किन्हीं दो समाजों का इतिहास एक जैसा नहीं होता, संस्कृति एक जैसी नहीं होती और कोई भी एक दूसरे का प्रतिरूप नहीं होता।"

3. सामाजिक परिवर्तन की गति में एकरूपता नहीं (NO uniformity in speed) : सामाजिक परिवर्तन सभी समाजों में होने पर भी सभी जगह एक समान नहीं है। शहरी क्षेत्रों में, ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा सामाजिक परिवर्तन अधिक तेजी से होता है।

4. सामाजिक परिवर्तन समुदाय परिवर्तन है (Social Change is related to social change) : उसी परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है जिसका प्रभाव सारे समुदाय द्वारा महसूस किया जाए। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक है न कि व्यक्तिगत।

प्रश्न 4: सामाजिक परिवर्तन वाले भिन्न–भिन्न तत्वों का विश्लेषण करें।

उत्तरः सामाजिक परिवर्तन को निर्धारित करने वाले मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:–

1. जैवीकीय तत्व (Biological Factors) : इनसे हमारा अभिप्राय उन कारणों से है जो आने वाली पीढ़ियों की संख्या, रचना तथा वंशानुगत गुणों का निश्चय करते हैं। यदि हम अपनी तुलना अपने पूर्वजों से करें तो हमें पता लगेगा कि हम उनके आकार विचारों और अन्य बातों से भिन्न हैं।

2. मनोवैज्ञानिक तत्व (Psychological Factors) : मनोवैज्ञानिक तत्वों से हमारा अभिप्रायः मनुष्य की परिवर्तनशील प्रकृति से है। मनुष्य प्रकृति से ही परिवर्तन प्रेमी है। मनुष्य में कुछ ऐसी जन्म–जात प्रवृत्तियां पाई जाती हैं जिस कारण वह सदा नई चीजों कमी खोज करता है।

3. भौतिक अथवा भौगोलिक तत्व (Geographical Factors) : भौतिक अवस्था भौगोलिक तत्व सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन है। ऋतु परिवर्तन, बाढ़, तूफान, भूचाल, खनिज पदार्थों का होना आदि ऐसे भौतिक तत्व हैं जिसके कारण सामाजिक संगठन व सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होते रहते हैं।

4. जनसंख्या के तत्व (Population Factors) : सामाजिक परिवर्तन में जनसंख्या का आकार, जनसंख्या की गतिशीलता तथा जनसंख्या की रचना बहुत महत्वपूर्ण है। स्मिथ के अनुसार, "स्थानान्तरण का जनसंख्या, शारीरिक बनावट तथा स्वास्थ्य पर ही नहीं बल्कि समाज में मानसिक ढांचे एवं प्रक्रियाओं पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है और वह व्यक्ति पर अत्यधिक प्रभाव डालता है।

5. सांस्कृतिक तत्व (Cultural Factors) : संस्कृति में परिवर्तन आने से सामाजिक ढांचे में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। भारतीय पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव पड़ने से अनेक सामाजिक परिवर्तन आए जैसे की स्त्री–शिक्षा, बाल–विवाह का अंत, पर्दा प्रथा का अंत आदि।

प्रश्न 5: सामाजिक परिवर्तन के मार्ग में कौन–कौन सी बाधाएं हैं?

उत्तरः परिवर्तन प्रकृति का नियम है फिर भी यह देखा जाता है कि परिवर्तनों को लोग आसानी से स्वीकार नहीं करते हैं। सामाजिक परिवर्तन में अनेक बाधाएं आती हैं जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं–

1. परम्परावाद (Tradition) : सामाजिक परिवर्तनों में सबसे बड़ी बाधा परम्परावाद है। मनुष्य स्वभाव से रूढ़िवादी है और जीवन में मनुष्य प्रथाओं के अनुसार कार्य करता है।
2. धर्म (Religion) : धर्म लोगों को अन्धविश्वासी, आलसी, डरपोक, भाग्यवादी तथा निष्क्रिय बनाता है। मार्क्स के अनुसार धर्म लोगों के लिए अफीम का कार्य करता है।
3. जाति (Caste) : भारत में विशेषकर जाति प्रभा सामाजिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण बाधा है। जातिवाद से समाज कई खंड़ों तथा उपखण्डों में बंट जाता है और इससे ऊंच–नीच की भावना पैदान होती है।
4. अज्ञानता (Illiteracy) : अज्ञानी और अशिक्षित व्यक्ति पढ़े–लिखे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक रूढ़िवादी और अन्ध–विश्वासी होता है। अज्ञानी व्यक्ति रीति–रिवाजों, प्रथाओं के दास होते हैं।
5. आर्थिक लागत (Economic) : किसी सामाजिक कार्यक्रम को लागू करने की धन राशि भी सामाजिक परिवर्तनों के मार्ग में बाधा बन सकती है। धन की कमी के कारण भी कई प्रगतिशील सुधारों को लागू नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 6: सामाजिक परिवर्तन के विकासवादी सिद्धांत का वर्णन कीजिए।

उत्तरः सामाजिक परिवर्तन के विकासवादी सिद्धांत को अवस्था का सिद्धांत भी कहते हैं। इस सिद्धान्त के मुख्य समर्थक हैं। कॉम्टे, हर्बट स्पैन्सर, हॉबहाऊस, (Comte, Herbert Spenscer, Hobhouse) इस सिद्धांत के अनुसार समाज एक अवस्था से दूसरी अवस्था तक विकास करता है। इसलिए इस सिद्धांत को अवस्था सिद्धांत भी कहा जाता है। इस सिद्धांत के समर्थकों के अनुसार समाज धीरे–धीरे सभ्यता की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करता है। सामाजिक परिवर्तन रेखीय ढंग से निरंतर सुधार की ओर बढ़ता है। इसलिए इस सिद्धांत को रेखीय सिद्धांत भी कहा जाता है।

प्रश्न 7: सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धांत को समझाइए।

उत्तर : चक्रीय सिद्धांत सामाजिक परिवर्तन का बहुत पुराना सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार मानव समाज में निरंतर दिन–रात, ऋतु तथा जलवायु–संबंधी परिवर्तन होते रहते हैं। स्प्रैंग्लर ने अपनी पुस्तक "Deadline of the west" में इस सिद्धांत का वर्णन किया है। स्प्रैंग्लर ने अपने पर्यवेक्षण से यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रत्येक का जीवन एक विशाल शरीर की भांति तन अवस्थाओं से गुजरा है– 1. जन्म, 2. बाल्यावस्था और प्रौढता या उन्नति, विनाश और विघटन। स्प्रैंग्लर का कहना है कि समाज जन्म–मृत्यु के समान चक्रवत् घूमता रहता है। इस चक्र को कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती। आज का समाज अपनी वृद्धावस्था में है। इसका पूर्णतया ह्रास होने के बाद फिर जन्म, विकास, प्रौढावस्था तथा मृत्यू का चक्रक शुरू होगा।

पैरेटो ने वर्ग व्यवस्था मे होने वाले चक्रीय परिवर्तन के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या की है। उनका विचार है कि प्रत्येक समाजिक संरचना 1 उच्च वर्ग, 2. निम्न वर्ग। इस दोनों में स्थिरता नहीं पाई जाती बल्कि इनमें चक्रीय गति पाई जाती है। समाज इन दोनों वर्गों में ऊपर से नीचे अथवा नीचे से ऊपर होता रहता है। यह प्रक्रिया इसी ढंग से चलती रहती है और इस चक्रीय गति के परिणामस्वरूप केवल सामाजिक ढांचे में पविर्तन होता रहता है। आर्नाल्ड जे॰टायनबी, सोरोकिन, बर्न्स आदि ने भी इस सिद्धांत का समर्थन किया है।

दोष – परंतु चक्रीय सिद्धांत का महत्वपूर्ण दोष यह है कि यह सिद्धांत न तो वैज्ञानिक है और न ही तथ्यों पर आधारित है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: यह किसने कहा है "इस परिवर्तन को केवल सामाजिक परिवर्तन मानेंगे जो इन में हों?"–

क) मैकाइवर तथा पेज　　ख) डॉसन तथा ग्रटिन मिलिन

ग) डेविस　　घ) गिलिन और गिलिन

प्रश्न 2: यह किसने कहा है, "सामाजिक परिवर्तन से अभिप्राय सामाजिक संगठन के कार्य और ढ़ाचें में परिवर्तनों से है?:–

क) डेविस　　ख) लेविस

ग) गिलिन और गिलिप　　घ) जोन्स

प्रश्न 3: सामाजिक परिवर्तन–

क) कभी नहीं होते　　ख) केवल भारत में होते हैं।

ग) सर्वव्यापी तथ्य हैं　　घ) यूरोप में होते रहते हैं।

प्रश्न 4: निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सामाजिक पवित्तन के संबंध में ठीक नहीं है?

क) सामाजिक परिवर्तन सर्वव्यापक तथ्य है।

ख) सामाजिक परिवर्तन की गति में एकरूपता नहीं होती।

ग) सामाजिक परिवर्तन की निश्चित भविष्यवाणी की जा सकती है।

घ) सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति विभिन्न समाजों में भिन्न होती है।

प्रश्न 5: निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सामाजिक परिवर्तन के संबंध में ठीक नहीं है?

क) सामाजिक परिवर्तन में धार्मिक परिवर्तन निहित होते हैं।

ख) सामाजिक परिवर्तन में मूल्यों का परिवर्तन निहित है।

ग) सामाजिक परिवर्तन में सांस्कृतिक परिवर्तन निहित होता है।

घ) सामाजिक परिवर्तन में राजनीतिक परिवर्तन निहित होता है।

प्रश्न 6: निम्नलिखित में से कौन–सा तत्व सामाजिक परिवर्तन को निर्धारित करता है?

क) जैविकीय तत्व　　ख) जनसंख्या के तत्व

ग) मनौवज्ञानिक तत्व　　घ) जाति प्रथा

प्रश्न 7: निम्नलिखित में से कौन–सा तत्व सामाजिक परिवर्तन में बाधा उत्पन्न नहीं करता?

क) धर्म　　ख) परम्परावाद

ग) स्वार्थहित　　घ) शिक्षा

उत्तर : 1.क, 2.क, 3.ग, 4.ग, 5.क, 6.घ, 7.घ